

ചിരാഗ

ഓരോ വർഷവും
ഈ കാലഘട്ടം
അനുഭവിക്കേണ്ട
താണ്. അതിനാൽ
ഈ സമയത്ത്
ഈ പ്രദേശത്ത്
ഈ വിധത്തിൽ
ഈ രീതിയിൽ
ഈ വിധത്തിൽ
ഈ വിധത്തിൽ

പാലക്കാട് മंडल

2022-2023



पालककाड मंडल
2022-2023

2022-2023

उपलब्धि



वर्ष 2021 के लिए मंडल में राजभाषा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए पालक्काड मंडल को “अंतर मंडलीय राजभाषा चल शील्ड” से सम्मानित किया गया ।



उदयपुर में दि.26.05.2022 को आयोजित अखिल रेल हिंदी वाक् प्रतियोगिता में श्रीमती अबिना आलियार, स्टेशन मास्टर/ कडलुंडि को द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ ।



आधार वर्ष - 2019 के लिए श्री के वी ईश्वरनकुट्टी, निजी सचिव II, पालक्काड को हिंदी में अधिकाधिक काम करने के उपलक्ष्य में रेलवे बोर्ड के व्यक्तिगत नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया ।

संरक्षक

श्री त्रिलोक कोठारी
मंडल रेल प्रबंधक

सह संरक्षक

श्री सी टी सक्कीर हुसैन
अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

संपादक

सुश्री बिनीता सोय
राजभाषा अधिकारी

संपादक मंडली

श्रीमती निपुणा शशिधरन
वरिष्ठ अनुवादक

श्रीमती सी रमा सुरेश
वरिष्ठ अनुवादक

श्री कुन्दन कुमार राउत
कनिष्ठ अनुवादक

साज सज्जा

श्रीमती सी रमा सुरेश
वरिष्ठ अनुवादक

कंप्यूटर प्रचालक

श्रीमती वी वी वसंता
टंकण अधीक्षक





संरक्षक की कलम से....

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि दक्षिण रेलवे पालक्काड मंडल की गृह पत्रिका चिराग का वर्ष 2022- 23 अंक प्रकाशित होने जा रहा है। राजभाषा हिंदी, सांस्कृतिक विविधता में एकता का प्रतीक है। हिंदी विभिन्न भाषा- भाषियों के बीच एक सेतु का कार्य करती है। राजभाषा हिंदी सांस्कृतिक और सामाजिक परंपरा की धनी है और विचारों और भावों की अभिव्यक्ति में पूर्ण सक्षम भी है। यह भारत के जन- जन के मन में बसी भाषा है। अतः हमारा संवैधानिक दायित्व तथा नैतिक कर्तव्य भी है कि हम हिंदी को अपने अधिकाधिक विभागीय कार्यों की भाषा बनाएं। मुझे विश्वास है कि पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक तथा रचनात्मक भाव सृजन करने में सफल होंगी। पत्रिका के संपादक मंडल, रचनाकारों तथा प्रकाशन से जुड़े सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के सफल प्रयासों के लिए हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

आपका शुभाकांक्षी

(त्रिलोक कोठारी)

मंडल रेल प्रबंधक

दक्षिण रेलवे, पालक्काड





सह संरक्षक की कलम से....

मुझे यह जानकर अतिप्रसन्नता हो रही है कि दक्षिण रेलवे पालक्काड मंडल के राजभाषा अनुभाग द्वारा हिंदी गृह पत्रिका का वर्ष 2022- 23 अंक प्रकाशित किया जा रहा है। इस अवसर पर मैं संपादक मंडल के सभी सदस्यों और सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूँ। 'चिराग' पत्रिका ने हिंदी के प्रचार -प्रसार में सदैव महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। गृह पत्रिका के द्वारा चालू लाइन कर्मचारियों एवं प्रशासनिक कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को बढ़ावा मिलता है। उन्हें अपनी प्रतिभाओं से परिचित होने का अवसर मिलता है। राजभाषा हिंदी की दशा और दिशा तय करने में और कार्यालय एवं इतर कार्यालय के रचनाकारों की रचनात्मकता को उभारने के लिए गृह पत्रिका से अच्छा साधन नहीं हो सकता। आशा है कि पत्रिका 'चिराग' अपनी रचनात्मकता को इसी प्रकार सार्थक करती रहेगी। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति और स्वर्णिम भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(सी.टी. सक्कीर हुसैन)

अपर मुख्य राजभाषा अधिकारी

एवं अपर मंडल रेल प्रबंधक

दक्षिण रेलवे, पालक्काड





संदेश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि पालवकाड मंडल की वार्षिक हिंदी गृह पत्रिका 'चिराग' के वर्ष 2022- 23 अंक का शीघ्र प्रकाशन होने जा रहा है। इस अवसर पर मैं पत्रिका के प्रकाशन में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं अन्य सदस्यों को बधाई देता हूँ। हिंदी हमारी राजभाषा है इस नाते सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग हमारा संवैधानिक तथा नैतिक कर्तव्य है। इसी कर्तव्य को निभाने के लिए राजभाषा अनुभाग द्वारा गृह पत्रिका का प्रकाशन किया जाता है, जिसके माध्यम से हिंदी को लोकप्रिय बनाने के साथ-साथ कार्यालय के कर्मचारियों की रचनात्मक प्रतिभा को एक प्लेटफार्म प्रदान किया जाता है। इस उद्देश्य की पूर्ति में पत्रिका 'चिराग' पहले भी सफल रही है एवं भविष्य में भी इसके सफल प्रकाशन की मैं कामना करता हूँ तथा पत्रिका के प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं प्रदान करता हूँ।

५- २५५५९
१३/१२

आर रघुरामन

अपर मंडल रेल प्रबंधक

एवं मुख्य परियोजना प्रबंधक/ गति शक्ति

दक्षिण रेलवे, पालवकाड मंडल



संदेश

यह बहुत ही खुशी की बात है कि हमारे मंडल से हिंदी गृह पत्रिका "चिराग" के वार्षिक अंक 2022-23 का प्रकाशन किया जा रहा है। मंडल की इस गृह पत्रिका के माध्यम से रेल कर्मियों की प्रतिभा को पाठकजन के बीच लाने का एक सहज प्रयास किया गया है।

पत्रिका के इस अंत में विभिन्न विषयों का समावेश किया गया है जिससे पाठकगण निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे। आशा है कि इस पत्रिका का नियमित प्रकाशन जारी रहेगा। मैं गृह पत्रिका "चिराग" के सफल प्रकाशन के लिए संपादक मंडल तथा अन्य सहयोगियों को बधाई देता हूँ तथा सभी रचनाकारों, रेल कर्मियों तथा उनके परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

जयकृष्णन.एस

एस जयकृष्णन

अपर मंडल रेल प्रबंधक

दक्षिण रेलवे, पालवकाड मंडल





संपादक की कलम से ...

पालक्काड मंडल की वर्ष 2022-23 की गृह पत्रिका 'विराग' के माध्यम से एक बार फिर आपके समक्ष मंडल के रेल कार्मियों की लेखन प्रतिभा को उजागर करने में अत्यधिक हर्ष की अनुभूति हो रही है।

कार्यालय के दैनिक काम काज में राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने में यह पत्रिका महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह एक ऐसा मंच प्रदान करती है जिससे कार्मिकों की लेखन प्रतिभा में निखार तो आता ही है, साथ ही हिंदी भाषा में मूल रूप से सोचने की शक्ति भी बढ़ती है। इस तरह हिंदी में कार्य करने में सहजता आएगी, जो हिचक व संकोच है, वह धीरे-धीरे दूर हो जाएगी।

भिन्न-भिन्न विषयों के लेखों, कविताओं को सम्मिलित करते हुए इस पत्रिका को रुचिकर बनाने का पूरा प्रयास किया गया है। इस अंक में अनेक विषयों को समेटा गया है, जिसमें यात्रा वृत्तान्त भी है, जो प्रसिद्ध पर्यटन स्थल की सैर कराएगा। कुछ ऐसे स्थलों से भी परिचित कराएगा जो लीक से हटकर हैं। लेखों के साथ कविताएं भी हैं जो हास्य, व्यंग्य व जीवन के कटु सत्य को प्रतिपादित करती हैं।

मैं उन तमाम लेखकों को धन्यवाद देना चाहती हूँ जिन्होंने लेखन के माध्यम से अपना सहयोग दिया। आशा करती हूँ कि उनका यह सहयोग आगे भी जारी रहेगा। आपकी प्रतिक्रियाएं और सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

बिनीता सोय

राजभाषा अधिकारी

दक्षिण रेलवे, पालक्काड मंडल



अनुक्रमणिका

1	एक पिता की व्यथा	चंद्रेश कुमार	1
2	नेल्लीयाम्पती	सी रमा सुरेश	2
3	ऐ हाल दिल का सुनाते	देवी सिंह मीना	5
4	दीपक	अशोक कुमार मीना	5
5	मधुमक्खी	बिनीता सोय	6
6	बरखा रानी	अब्दुल नसीम	7
7	श्रेष्ठ भाषा मलयालम	निपुणा शशिधरन	8
8	पुरस्कार और दंड	कुंदन कुमार राउत	12
9	अधूरी अभिलाषा	मनोज कुमार यादव	14
10	रेल गाडी	उणिक्कणन नंबूतिरी के वी	15
11	जीवन में खुशी	अंजु बी शेणॉय	16
12	परिवार नियोजन व जे सी बी	प्रवेश कुमार निमेश	17
13	मीनू की दौड़	देवी सिंह मीना	18
14	छिपा हुआ प्रेम	मेरिकुट्टी कुरियाकोस	19
15	ज़िंदगी	अंजली पी	20
16	आज़ादी का अमृत महोत्सव	लक्ष्मी विश्वनाथन	21
17	देवभूमी मनाली	निपुणा शशिधरन	22
18	गाड़ी प्रबंधक की कलम से	धर्मेन्द्र दास	24
19	चेम्बै वैद्यनाथ अय्यर	सी रमा सुरेश	26
20	किसी के बारे में राय बनाने से पहले सोचें	बिनीता सोय	29
21	सोशल मीडिया का जीवन पर प्रभाव	लक्ष्मी विश्वनाथन	30
22	अमर प्रेम	बिभास पासवान	32
23	यदि यौवन जानता, यदि बुढ़ापा सक्षम होता	कुंदन कुमार राउत	34
24	बदलता भारत : नयी आशाएं, नयी चुनौतियां	अबिना अलियार	37
25	सुविचार	वी वी वसंता	43

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के अपने हैं। इसके लिए संपादक मंडल उत्तरदायी नहीं है।

केवल सरकारी प्रयोग के लिए।

* एक पिता की व्यथा *

यह एक पिता और पुत्र के मध्य व्यतीत जीवन का वो एक - एक पल है ।

पिता ने बचपन में घोड़ा बनकर, पीठ पर सवारी कराई जिस बेटा को ॥

अपने तलवे घिस घिस बहुत कमाया और खर्च कर दिया उस बेटे पर ।

खुद ने फटी चप्पल से ही काम चलाया, नया जूता दिलाया बेटे को
खुद की फटी धोती ना दिखी, और महंगा सूट पैट दिलाया बेटे को ।

बहुत पढ़ाया, बहुत लिखाया, फिर चढ़ाया घोड़ी पर ॥

पांच- पांच सौ के नोट उड़ाए, बेटा बहू की जोड़ी पर ।

थोड़े दिन तो बहू और सास की खूब बनी ॥

फिर शुरू हो गई, दोनों में किचकिच और झिंकझिंक ।

सास बहू की लड़ाई में अब, बेटा भी कूदने लगा ॥

पत्नी का पक्ष ले-ले कर, माता पिता को शर्मिंदा करने लगा ।

छाती से लगा कर बड़ा किया जिसे, अब वही छाती में चुभने लगा ॥

बेटा बड़ा होकर अब पिता से, संपत्ति में बटवारे की बात करने लगा ।

शादी होकर बेटी चली गयी और बेटा भी अलग रहने लगा ॥

बुढ़ापे का सहारा बेटा, अब आंख से ओझल होने लगा ।

सिसक सिसक कर रोने लगी मां, घुट घुट कर रोने लगा बाप ॥

बुढ़ापे में सेवा की टूटी उम्मीदें, सोचा क्या किया ऐसा गजब पाप ।



घर अब खालीपन और सूनेपन से भर गया ॥

बेटा पैदा करके भी, माँ बुढ़ापे में बांझ जैसी रह गयी ।

अपना खून ही अब पराया लगने लगा । खुद की व्यथा किसी को बता ना सका ॥

अंदर ही अंदर रोने लगा मन। चेहरे पर झूठी मुस्कान से उदासी छुपाने लगा ।

झुकी कमर और कराहते घुटने, अब बुढ़ापे का इशारा करने लगे ॥

बेटा होते हुए भी बे औलाद सा जीवन जीने को मजबूर होने लगे ।

जिस बेटे के आने की खुशी में, बहुत बेंड बाजा बजवाया था ।

बुढ़ापे में बिस्तर में पड़े मां-बाप की सेवा करने, अब बेटा ना आता था ।



: चंद्रेश कुमार :

मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक/कोळिक्रोड

कुछ पल बैठा करो माँ-बाप के पास हर चीज नहीं मिलती मोबाइल के पास ।

नेल्लियाम्पती



नेल्लियाम्पती केरल के प्रसिद्ध हिल स्टेशनों में से एक है और पालक्काड से 52 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह पारिस्थितिक पर्यटन और रुमानी सैरगाह के लिए एक आदर्श स्थान है। सदाबहार जंगल, संतरे, चाय, कॉफी व इलायची के बागान और धुंधले पहाड़ों से समृद्ध शानदार घाटियाँ नेल्लियाम्पती को एक आकर्षक स्थान बनाते हैं। नेल्लियाम्पती की टॉपोनीमी (स्थान नाम) बड़ी दिलचस्प है। 'नल्ली' अर्थात् स्थानीय किसानों द्वारा पालन किए जाने वाले प्राचीन धर्म में एक देवी है और 'पथी' अर्थात् 'स्थान'। अक्सर 'गरीबों की ऊटी' कहा जाने वाला नेल्लियाम्पती, ट्रेकिंग पगडंडी और अद्भुत मौसम के लिए भी प्रसिद्ध है और प्रकृति का जादू इसे तस्वीर के अनुकूल पर्यटन स्थल बनाता है।

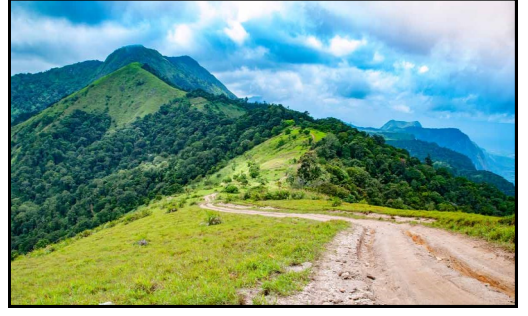
पालक्काड जिले के नेन्मारा शहर से, शानदार नेल्लियाम्पती पहाड़ी श्रृंखलाओं की बादलों से घिरी चोटियाँ देखने लायक है। पहाड़ियों की ऊँचाई 467 मीटर से 1,572 मीटर तक है और ये दर्शकों को बहुत सुकून देता है। नेल्लियाम्पती तक पहुंचने के लिए नेन्मारा से पोथुंडी बांध तक जाने वाली सड़क पर यात्रा करना है और रास्ते में लगभग 10 हेयरपिन मोड़ आते हैं।



पोथुंडी बांध एक गैर-कंक्रीट कोर बांध है जिसे गुड़ और क्विक लाइम कोर के असामान्य मिश्रण से बनाया गया है। पोथुंडी बांध को वास्तव में अयालार नदी की दो सहायक नदियाँ, अर्थात् मीनचाडिपुळा और पडिपुळा में बनाया गया है। यह एशिया का दूसरा बांध है जिसे सीमेंट मिश्रण का

उपयोग किए बिना बनाया गया है और यह बांध पालक्काड जिले में सिंचाई और कृषि कार्य का मुख्य स्रोत है। पैदल मार्ग से बांध के शीर्ष तक पहुंचा जा सकता है, और बांध के बाईं ओर नेल्लियाम्पती घाटी का लुभावना दृश्य तथा बांध के दाईं ओर धान के खेतों की हरियाली देखा जा सकता है।

जैसे-जैसे घाट सड़क नेल्लियाम्पती तक जाती है, कुछ स्थानों पर ऐसे व्यूपॉइंट हैं जहां से पालक्काड जिला का विशाल हिस्सा धान के खेतों से भरा हरा-भरा कालीन के रूप में दिखाई देता है। यह पालक्काड गैप, जो इस क्षेत्र में पश्चिमी घाट के गठन में एक भौगोलिक घटना है, निकटवर्ती तमिलनाडु राज्य के कुछ हिस्सों का दृष्टिगोचर करते हुए एक शानदार दृश्य भी प्रदान करता है।



रास्ते में, जैव खेती में रुचि रखने वाले लोग निजी तौर पर प्रबंधित खेतों और विभिन्न बागान कंपनियों द्वारा प्रबंधित विशाल चाय बागानों पर करीब से नज़र डाल सकते हैं। पलगपांडी एस्टेट में सबसे ऊपर के पॉइंट तक पहुंचने के लिए आगे बढ़ते समय रास्ते में स्थित जैव-फार्म एक प्रमुख मील का पत्थर है।

एस्टेट में ब्रिटिश शासन के दौरान बनाया गया एक अनूठा बंगला है, जिसे अब निजी स्वामित्व वाले रिसॉर्ट में बदल दिया गया है।



पलगपांडी से पास ही सीतार्कुड नामक एक व्यूपॉइंट है जहां एक घाटी का शानदार दृश्य और अतिरिक्त आकर्षण प्रदान करता हुआ एक 100 मीटर ऊंचा झरना देखने को मिलता है। यह नेल्लियाम्पती से 8 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। मान्यताओं के अनुसार, सीतार्कुड वह स्थान है जहां भगवान राम, लक्ष्मण और सीता ने अपने वनवास के दौरान विश्राम

किया था। उस स्थान पर एक मंदिर है जहां पहले नेल्लियाम्पती के निवासी प्रसाद चढ़ाते थे। स्थानीय लोगों के अनुसार यह क्षेत्र हाथी के रास्ते का हिस्सा है और अक्सर यहां तेंदुए भी आते हैं।

नेल्लियाम्पती का एक और लुभावना पॉइंट – माम्पारा, जहां पलगपांडी से पैदल यात्रा करते हुए या जीप से पहुंच सकते हैं। पलगपांडी एस्टेट के आस-पास के क्षेत्र में चाय, इलायची और कॉफी के बागान हैं और आस-पास की पहाड़ियों में भारतीय गौर, हाथी, तेंदुए, विशाल गिलहरी आदि के रूप में अनेक वन्यजीवों की एक झलक देखी जा सकती है और यह पक्षी प्रेमियों के लिए जन्नत भी है।

स्थानीय निवासियों व पर्यटकों के बीच एक और लोकप्रिय पिकनिक स्थल है पदगिरी जिसे नेल्लियाम्पती पहाड़ियों की सबसे ऊंची चोटी माना जाता है। प्यार से नेलिकोटा के रूप में जाने जाना वाला यह चोटी समुद्र तल से 1500 मीटर की ऊंचाई पर है। चोटी की सबसे उल्लेखनीय विशेषता है भव्य सागौन बागान।



केशवनपारा, नेल्लियाम्पती में एक और व्यूपॉइंट है। इस जगह का मुख्य आकर्षण है खड़े पहाड़, घाटियां और अन्य सुरम्य स्थान। केशवनपारा की एक अनूठी विशेषता एक जल कुंड है जो भयंकर गर्मी के दौरान भी सूखता नहीं है। इसके अलावा देखने लायक एक और स्थान है करडिपारा। करडिपारा का मुख्य आकर्षण नूरडीपालम, हैंगिंग ब्रिज, है। यहाँ आगंतुकों को नेल्लियाम्पती पहाड़ियों के स्टार निवासी ग्रेट हॉर्नबिल देखने को मिलता है।



नेल्लियाम्पती शहर का मुख्य आकर्षण कृषि विभाग का खेत है जो ऑरेंज फार्म के रूप में लोकप्रिय है। पर्यटक संतरे, पैशन फल और अन्य फल देने वाले पेड़ों के नज़ारों का आनंद ले सकते हैं। इसके अलावा ठंडी जलवायु वाले विशिष्ट कई फूलों के पौधे भी पाए जाते हैं। यहाँ से पौधे खरीदी भी जा सकती हैं।



कोई भी पालक्काड से नेल्लियाम्पती के लिए गाड़ी या बस ले सकता है, लेकिन इस जगह का पता लगाने का सबसे अच्छा तरीका स्वयं ड्राइव करना है। नेल्लियाम्पती का मनमोहक परिवेश आपको अपनी ओर आकर्षित करेगा। वास्तविक सुंदरता कैसी दिखती है, इसका आपको अनुभव यहाँ होगा। आपके चारों ओर की शांति आपके मन, शरीर और आत्मा को आराम देगी और फिर से जीवंत कर देगी।

: सी रमा सुरेश :

वरिष्ठ अनुवादक/पालक्काड



प्रकृति की हर चीज में कुछ न कुछ अद्भुत जरूर है।



ऐ हाल दिल का सुनाते

दर्द तो हँस के सहते थे
 अकेले तन्हा रहते थे
 हम तो सोच में डूबे थे
 लोग दीवाना कहते थे
 चेहरा मायूस रहता था
 मुस्कान लाते कैसे ... ?
 ऐ हाल दिल का सुनाते कैसे ?
 दिन भर सोना था
 रातों को जगना था
 सर्दी का मौसम था
 और सर पे पसीना था
 सावन भी सूखा था
 बारिश बरसाते कैसे ... ?
 ऐ हाल दिल का सुनाते कैसे ?
 इम्तिहान भी सर पे थे
 लाइलाज बीमारी थी
 ना चाह के भी जी रहे थे
 कैसी मजबूरी थी ?
 मासूम बेवफ़ा थी
 उसे रुलाते कैसे ... ?
 ऐ हाल दिल का सुनाते कैसे ॥

: देवी सिंह मीना :

चल टिकट निरीक्षक/श/पालक्काड



दीपक

एक लौ एक बाती
 चंद उजाला चीरू तिमिर की छाती
 पतंगों की मधुशाला में
 मंद उजाले में प्रातः चलती चाकी ।
 सागर मिले दरिया मिले
 बहने को छोटी गगरियाँ मिले
 शुक्र करो तुम थोड़ा रब का
 वरना जलने को सारी नगरिया मिले ।
 गगन दीप जले
 सागर के सीप हले
 पलभर जीऊँ अभिमान से
 यूँ तो क्षण भर जीना ही भले ।

: अशोक कुमार मीना :

वरिष्ठ वाणिज्य लिपिक/ मंगलूर

मधुमक्खी



क्या मिसाल दूं तेरे बड़प्पन की

अपना घर तोड़ने वालों को भी, तुम

मीठी औषधि का उपहार देती हो ।

यह बड़प्पन हमें देखने को मिलता है मधुमक्खी में। यह ना सिर्फ हमें मीठी शहद देती है बल्कि पर्यावरण संरक्षण में भी मुख्य भूमिका निभाती है। दुनिया को हरा-भरा बनाने में जितनी भूमिका मिट्टी, पानी और धूप का है, उतनी ही भूमिका मधुमक्खी का भी है। दुनिया की फसलों का कम से कम 30% और सभी पौधों के 90% को फैलने और पनपने के लिए क्रॉस-परागण की आवश्यकता होती है और मधुमक्खियां हमारे सबसे महत्वपूर्ण परागणकर्ता हैं। मधुमक्खियां जैव विविधता का हिस्सा हैं जिस पर हम सभी अपने अस्तित्व के लिए निर्भर करते हैं।

संयुक्त राष्ट्र के खाद्य एवं कृषि संगठन (एफ ए ओ) के मधुमक्खी विशेषज्ञों के अनुसार दुनिया के खाद्य उत्पादन का एक तिहाई हिस्सा मधुमक्खियों पर निर्भर करता है। जब जानवर और कीड़े फूलों के पराग को उठाते हैं और इसे फैलाते हैं तो वे पौधों का प्रजनन करने की अनुमति देते हैं, जिसमें कई खाद्य फसलें भी शामिल हैं। पक्षी, पशु और लोग परागण करते हैं लेकिन सबसे आम परागणकर्ता कीड़े हैं और उनमें से हैं - मधुमक्खियां।

पर्यावरण प्रणाली में मधुमक्खियों के महत्व और उनके संरक्षण के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से वर्ष 2017 से 20 मई को विश्व मधुमक्खी दिवस के तौर पर मनाया गया और वर्ष 2018 के 20 मई को पहला विश्व मधुमक्खी दिवस के रूप में मनाया गया। इसे मनाने का मुख्य उद्देश्य है कि लोगों को मधुमक्खियों और उस प्रजाति के अन्य कीड़ों तथा उनके आवासों के संरक्षण के प्रति जागरूक करना तथा लोगों को फसलों पर परागण के महत्व, बागवानी, मधुमक्खी पालन और इससे जुड़े उत्पादों शहद, रॉयल जेली, बी-पोलेन, प्रोपोलिस और बी-वैक्स आदि के बारे में विस्तार से जानकारी देना है।

प्रख्यात वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन ने कहा था कि यदि मधुमक्खियां पृथ्वी से गायब हो जाएं तो 4 साल में मानव जाति का अस्तित्व इस दुनिया से खत्म हो जाएगा। क्योंकि दुनिया भर की लगभग 90% जंगली फूल, पेड़ पौधों की प्रजातियां 75% से अधिक खाद्य फसलें और 35% वैश्विक कृषि भूमि परागण पर निर्भर करती है। मधुमक्खी एक ऐसा कीट है जो किसी भी तरह का रोगजनक बैक्टीरिया या वायरस नहीं छोड़ता है। ऐसा कभी देखने को नहीं मिलता कि मधुमक्खी के संपर्क में आने से व्यक्ति को कोई बीमारी हो जाए। विश्व मधुमक्खी दिवस ना सिर्फ मधुमक्खियों के संरक्षण के लिए है बल्कि परागण करने वाले अन्य कीटों जैसे चिड़ियों, चमगादड़ और तितलियों के महत्व का है।

यह चिन्ता का विषय है कि मानवीय गतिविधियों, पेड़-पौधों पर कीटनाशकों के छिड़काव, बढ़ते प्रदूषण, औद्योगिकरण इत्यादि के दुष्प्रभावों के कारण दुनिया भर में मधुमक्खियों की संख्या में भारी कमी आ रही है और यदि ऐसा ही चलता रहा तो आने वाले दिनों में जीवन को लेकर हमें बड़े खतरों का सामना करना पड़ सकता है। चूंकि हमारा जीवन परागणकों पर निर्भर है इसलिए उसकी ओर अधिक ध्यान देना और जैव विविधता के नुकसान को रोकना आवश्यक है।

: बिनीता सोय :

राजभाषा अधिकारी/पालक्काड

बरखा रानी



गगन में काली घटाएं छाई ।

टिप टिप करती बरखा आई ॥

बूंद बूंद में मधुर रस छिपाती ।

धरती के कण कण को महकाती ॥

मिट्टी की मनमोहक खुशबू ।

जीवन को मदहोश बनाती ॥

प्यासी धरती पर गिरती बूंदे ।

सरगम का राग सुनाती ॥

कोयल कूकी चिड़ियाँ चहकीं ।

नदियां भी सुर ताल मिलातीं ॥

सतरंगी इंद्रधनुष का ताज सजा ।

अंबर भी अपना रूप दिखाए ॥

फूटी कोपल फसलें लहलहाई ।

हर जगह हरियाली छाई ॥

आ गयी पेड़ पौधों और नदियों में जान ॥

खिलखिला उठे पशु, पक्षी और इंसान ॥

देख के ये बरखा खूब हमें ललचाती है ।

हरे रंग का उजाला बचपन की याद दिलाता है ॥

: अब्दुल नसीम :

मुख्य स्वास्थ्य निरीक्षक/मंगलूरु

श्रेष्ठ भाषा मलयालम.....

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और भाषाएं मनुष्यों के संचार का प्राथमिक साधन हैं। मनुष्य अपने विचार भाषण (बोली जाने वाली भाषा), संकेत या लेखन के माध्यम से व्यक्त करता है। भाषा संचार की एक संरचित प्रणाली है। किसी भाषा की संरचना उसका व्याकरण है और मुक्त घटक इसकी शब्दावली है। मानव भाषा, पशु संचार की ज्ञात प्रणालियों के बीच अद्वितीय है कि यह संचरण के एक एकल मोड (दृष्टि, ध्वनि, आदि) पर निर्भर नहीं है, संस्कृतियों



के बीच और समय के पार अत्यधिक परिवर्तनशील है, और अन्य प्रणालियों की तुलना में अभिव्यक्ति की एक बहुत व्यापक श्रृंखला प्रदान करता है। मानव भाषाओं में उत्पादकता और विस्थापन के गुण होते हैं, और सामाजिक सम्मेलन और सीखने पर भरोसा करते हैं।

भारत में बोली जाने वाली भाषाएं कई भाषा परिवारों से संबंधित हैं, जिनमें से प्रमुख 78.05% भारतीयों द्वारा बोली जाने वाली इंडो-यूरोपीय भाषाएं और 19.64% भारतीयों द्वारा बोली जाने वाली द्रविड़ भाषाएं हैं। दोनों परिवारों को एक साथ कभी-कभी भारतीय भाषाओं के रूप में जाना जाता है। भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में 22 भाषाओं को सूचीबद्ध किया गया है, जिन्हें अनुसूचित भाषाओं के रूप में संदर्भित किया गया है और मान्यता, स्थिति और आधिकारिक प्रोत्साहन दिया गया है। इसके अलावा, हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया है। भारत सरकार ने कन्नड़, मलयालम, ओडिया, संस्कृत, तमिल और तेलुगु को शास्त्रीय भाषा का गौरव प्रदान किया है। शास्त्रीय भाषा का दर्जा उन भाषाओं को दिया जाता है जिनकी समृद्ध विरासत और स्वतंत्र प्रकृति होती है।

भारत की जनगणना 2001 के अनुसार, भारत में 122 प्रमुख भाषाएं और 1599 अन्य भाषाएं हैं। दक्षिण भारतीय भाषाएं द्रविड़ परिवार से हैं। व्याकरणविदों, भाषाविदों और विद्वानों ने मलयालम की उत्पत्ति के बारे में अपने स्वयं के विचारों को सामने रखा है। लेकिन इनमें से अधिकांश विचार केवल विचार हैं। कुछ विद्वानों का मानना है कि मलयालम का विकास प्राचीन प्राकृत से हुआ था। विचार का एक और स्कूल है जो कहता है कि जंगलों में रहने वाली जनजातियां द्रविड़ भाषा के साथ एक मिश्रित स्वतंत्र भाषा बोलती थीं जो वर्षों बाद मलयालम में बदल गई। विद्वानों ने इस बात पर भी आश्चर्य व्यक्त किया है कि कैसे मलयालम और तमिल में कई विषयों पर समानता है.... कुछ का तर्क है कि मलयालम तमिल की बेटी है, ऐसे अन्य लोग हैं जो तर्क देते हैं कि मलयालम द्रविड़ भाषा की बेटी और तमिल की बहन है।

'मलयालम' शब्द का पहला भाग, यानि, 'मला' पहाड़ी को संदर्भित करता है, और अंतिम भाग 'आलम' समुद्र की गहराई को ('आलम' का अर्थ है 'गहराई')। इसलिए 'मलयालम' शब्द पश्चिमी घाट और अरब सागर के बीच स्थित भूमि को संदर्भित करता है। 'केरल भाषा' का उल्लेख 14 वीं शताब्दी के व्याकरण पाठ, लीलातिलकम (पवित्र चिह्न की पुस्तक) में मिलता है। हालांकि, आधुनिक भाषा के इतिहास और तुलनात्मक साहित्य से परिचित विद्वानों ने मलयालम के बारे में एक नया दृष्टिकोण विकसित किया। यह सच है कि मलयालम का तमिल के साथ घनिष्ठ संबंध है। एक स्वतंत्र भाषा के रूप में मलयालम का विकास 9 वीं शताब्दी के रिकॉर्ड और घोषणाओं में पाया जाता है। संभवतः चार या पांच शताब्दियों (9 वीं शताब्दी से 13 वीं शताब्दी) के

दौरान तमिल और मलयालम अलग-अलग भाषाएं बन गईं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि तमिल ने सबसे प्राचीन होने और एक समृद्ध परंपरा रखने के अपने अस्तित्व को साबित कर दिया है। मलयालम भाषा पर तमिल के प्रभाव को इसके विकास के पहले दशकों में समझा जा सकता है। यद्यपि मलयालम जनता की भाषा थी, तमिल को केरल के पश्चिमी हिस्सों में एक विद्वानों की भाषा का स्थान प्राप्त हुआ। धीरे-धीरे, समय बीतने के साथ, मलयालम, साहित्य की ऊंचाइयों तक पहुंच गया, शाही घोषणाओं और दस्तावेजों में जगह मिली।

दक्षिण भारत में ब्राह्मणों, और विशेष रूप से केरल में, संस्कृति के मामलों में संस्कृत का व्यापक प्रभाव देखा जा सकता है। इस प्रकार वे केरल के जीवन और भाषा को प्रभावित करते हैं। मलयालम में प्रयोग की जाने वाली ध्वनियों, वाक्य संरचना के रूपों, अर्थों आदि में आर्य भाषा का प्रभाव प्रतिबिंबित होता है। जो एक उत्प्रेरक की तरह काम करती है। आधुनिक मलयालम में विभिन्न प्रकार के भाषा रूपों को देखा जा सकता है। जाति, क्षेत्र, व्यवसाय, शैली और असंख्य भाषा रूप मलयालम का गठन करते हैं। समाचार पत्र, रेडियो, अध्ययन सामग्री और शिक्षा ने मानवीय भाषा के रूप को इसे बढ़ावा देने में मदद की है। भूगोल, समाज और संस्कृति के अलावा, जाति और धर्म ने भी मलयालम में योगदान दिया है। ब्राह्मणों, हरिजनों, नायरों, ईसाइयों और मुसलमानों द्वारा उपयोग की जाने वाली भाषा रूपों की खोज की गई। जबकि संस्कृत के शब्द आमतौर पर ब्राह्मणों द्वारा अपनी भाषा में काफी हद तक उपयोग किए जाते हैं, इसका अन्य वर्गों द्वारा विरल रूप से उपयोग किया जाता है। ईसाइयों द्वारा बोली जाने वाली भाषा में, हम अंग्रेजी, सीरियाक, लैटिन और पुर्तगाली शब्द पा सकते हैं। मुसलमान अरबी और उर्दू शब्दों का इस्तेमाल करते हैं। प्राकृत, पाली, मराठी, हिंदी, फारसी, डच और फ्रेंच जैसी कुछ अन्य भाषाओं का प्रभाव इसके विकास और परिवर्तन के दौरान देखा जा सकता है। इसलिए, यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि कई विदेशी शब्द मलयालम का हिस्सा बन गए हैं।

द्रविड़ भाषाओं में, तमिल, कन्नड़ और तेलुगु को मलयालम से पहले शास्त्रीय भाषा का दर्जा मिला, हालांकि मलयालम सबसे पुराना है। शास्त्रीय दर्जा प्रदान किए जाने के लिए, भारत सरकार कतिपय शर्तें/मानदंड निर्धारित करती है। कोई भी भाषा 1500 साल से अधिक पुरानी होनी चाहिए। तमिल, कन्नड़, तेलुगु और मलयालम ने इन सभी शर्तों को पूरा किया है। साहित्यिक उत्पादन, उपलब्धि और गौरव के मामले में, मलयालम भारतीय भाषाओं में तीसरे स्थान पर है और, आधुनिक साहित्य की बात करें, तो भारत में सबसे प्रतिष्ठित और समृद्ध भाषाएं मलयालम, कन्नड़ और बंगाली हैं। जनसंख्या के आधार पर यह पाया जाता है कि मलयालम चौथे स्थान पर है। यूनेस्को की भाषा अनुसूची के अनुसार, स्वतंत्र लिपि और साहित्य के मामले में मलयालम का स्थान 26 वां है। मलयालम साढ़े तीन करोड़ से अधिक लोगों की मातृभाषा है। केरलवासियों में से, 96.56% लोगों की मातृभाषा मलयालम है।

तमिलनाडु के तेनी से प्राप्त 'पुलीमानकोम्बु विरकल' शिलालेख, एडक्कल गुफा शिलालेख, पट्टनम शिलालेख और निलम्बूर के नेडुमकायम शिलालेख साबित करते हैं कि मलयालम का 1500 से अधिक वर्षों का इतिहास है। केरल भी संगम साहित्य पर अधिकार का दावा कर सकता है। संगम कवियों में लगभग पैंतालीस केरलवासी हैं। 'सिलपतिकारम', 'आङ्कुरुनु', 'पटिट्टरुपत्तु' केरल का अद्वितीय योगदान है। संगम साहित्य में कई 'मलनाडु' शब्द हैं। संगम साहित्य में उपयोग की जाने वाली भाषा से पता चलता है कि मलयालम और तमिल की एक सामान्य जड़ है। यह केवल इस सबूत की पुष्टि करता है कि मलयालम एक प्राचीन जड़ से

विकसित हुआ था। संगम साहित्य हमारे पिछले इतिहास और भाषा पर प्रकाश डालता है। कहने का तात्पर्य यह है कि मलयालम की उत्पत्ति एक पूर्व-द्रविड़ भाषा से हुई थी, इस भाषा की एक पूरी तरह से लिखित रूप अतीत में अनुपस्थित था। साहित्यिक कार्यों को शुरू में मौखिक रूप से पेश किया गया था। लिखित शब्दों का गठन बहुत बाद में किया गया था। उस समय के प्रसिद्ध कृति "सिलपतिकारम" में चक्क्यार और चेरा राजाओं का संदर्भ शामिल है।

जांच के आधार पर, यह साबित किया जा सकता है कि मलयालम एक आदि द्रविड़ भाषा से विकसित हुआ है। हम पाते हैं कि मलयालम भाषा में कई बदलाव हुए हैं। ब्राह्मणों, नम्बूतिरियों और शाही अधिकारियों के आने के साथ और उनके ज्ञान के आधार पर मलयालम भाषा बदल गई। संस्कृत, जैसे कि पहले चर्चा की गई थी, ने मलयालम में इस हद तक घुसपैठ की, कि आज मलयालम से लेकर आदि द्रविड़ भाषा की जड़ों का पता लगाना भी मुश्किल है। हालांकि, इस बात पर जोर देने की आवश्यकता है कि बारीकी से अवलोकन करने पर, यह देखा जाएगा कि केरल में बोली जाने वाली और लिखी जा रही भाषा की जड़ें संगम साहित्य में हैं।

मलयालम गद्य और कविता असाधारण रचनाओं के साथ समृद्ध हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र की पहली व्याख्या और अनुवाद मलयालम में था। इसी प्रकार, शंकर भाष्यम के अनुसार भगवद् गीता का पहला लिप्यंतरण मलयालम में हुआ था। पाट्टू (गीत), मणिप्रवालम, किलिपाट्टू, आट्टकथा और तुल्लल ने मलयालम साहित्य को समृद्ध किया है। तमिल और तेलुगु में गीत और मणिप्रवालम केवल नाम हैं; वे मलयालम में बहुत प्रमुख हैं।

800 और 1300 ईस्वी के बीच, प्राचीन मलयालम ने शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त किया। दो सौ से अधिक शिलालेख, ताम्रपत्र, भाषाकौटिल्यम, आट्टप्रकरंगळ, क्रमदीपिकळ, रामचरितम, चम्पस, मणिप्रवालम रचनाएं और निबंध इस काल के हैं। 1300 से 1600 ईस्वी तक की अवधि को मलयालम शास्त्रीय चरण के मध्ययुगीन काल के रूप में वर्णित किया गया है। इस काल से संबंधित लीलातिलकम, कन्नासा कवि, पूनम नंबूथिरी, चेरुसेरी आदि के लेखक थे। 1600 ईस्वी की अवधि आधुनिक काल को चिह्नित करती है। एलुत्तच्चन के कार्यों के साथ, साहित्य ने एक मानवीय भाषा की स्थिति का रूप प्राप्त किया। एलुत्तच्चन की साहित्यिक शैली ने साबित कर दिया कि मलयालम भाषा किसी भी साहित्यिक रूप को संभाल सकती है। ये वे सबूत थे जो केरल सरकार ने शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्राप्त करने के लिए एक रिपोर्ट में केंद्र सरकार को प्रस्तुत किए थे।

इस संबंध में गठित एक विशेषज्ञ समिति ने 19 दिसम्बर, 2012 को मलयालम भाषा को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने की सिफारिश की थी। केंद्र सरकार के संस्कृति विभाग ने सिफारिशों को स्वीकार करते हुए इसे आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रधानमंत्री कार्यालय को अग्रेषित कर दिया। 23 मई को हुई केंद्रीय मंत्रिमंडल की बैठक में मलयालम को शास्त्रीय भाषा का दर्जा देने का निर्णय लिया गया। शास्त्रीय दर्जा प्राप्त करने का अर्थ है कि केंद्र सरकार के तहत एक केंद्र, मलयालम भाषा के साहित्य और संस्कृति के देख-रेख का काम करना शुरू कर देगा। केंद्रीय विश्वविद्यालयों में मलयालम भाषा विभाग शुरू करने के लिए कदम उठाए जाएंगे। अंतरराष्ट्रीय मानकों के समान भाषा और साहित्य के अध्ययन के लिए पुरस्कार की स्थापना की जाएगी।

यह निधि केन्द्र सरकार द्वारा वितरित की जाएगी। केन्द्र सरकार से प्राप्त मान्यता निश्चित रूप से मलयालम भाषा और साहित्य की प्रगति को कई गुना बढ़ाएगी और बढ़ावा देगी। केरल सरकार ने भी मलयालम को बढ़ावा देने के लिए मलयालम को राज्य सरकार की भाषा घोषित की है। भाषा की समृद्धि, संस्कृति की समृद्धि है चूंकि भाषा संस्कृति की संवाहिका है।.....

: निपुणा शशिधरन :

वरिष्ठ अनुवादक/पालक्काड

संविधान की अष्टम अनुसूची में शामिल भाषाएं

क्रम सं	भाषा	मुख्य रूप से जिस राज्य में बोली जाती है	मान्यता प्राप्त वर्ष
1	असमिया	असम	1950
2	बंगाली	पश्चिम बंगाल	1950
3	बोडो	असम, पश्चिम बंगाल	2003
4	डोगरी	जम्मू, हिमाचल प्रदेश	2003
5	गुजराती	गुजरात	1950
6	हिन्दी	उत्तरी भारत के अधिकांश भागों	1950
7	कश्मीरी	जम्मू व कश्मीर	1950
8	कन्नड़	कर्नाटक	1950
9	कोंकणी	गोवा और कर्नाटक के कुछ हिस्सों में	1992
10	मलयालम	केरल	1950
11	मणिपुरी	मणिपुर	1992
12	मराठी	महाराष्ट्र	1950
13	मैथिली	बिहार के कुछ हिस्सों में	2003
14	नेपाली	सिक्किम और पश्चिम बंगाल के कुछ हिस्सों में	1992
15	उड़िया	ओडिशा	1950
16	पंजाबी	पंजाब, चंडीगढ़	1950
17	संस्कृत	-	1950
18	सिंधी	गुजरात, राजस्थान और महाराष्ट्र में बिखरी हुई	1967
19	संथाली	झारखंड, बिहार, पश्चिम बंगाल में संथाल जनजाति	2003
20	तमिल	तमिलनाडु, पुदुचेरी	1950
21	तेलुगु	तेलंगाना और आंध्र प्रदेश	1950
22	उर्दू	उत्तरी भारत	1950

पुरस्कार और दंड



हम सभी समाज में जन्म लेते हैं। समाज में बड़े होते हैं। समाज में मानवीय क्रियाकलाप करते हैं एवं समाज में हमारी मृत्यु हो जाती है। समाज स्वयं में एक व्यवस्था है। उस समाज को चलाने के लिए कई उप-व्यवस्थाएं काम करती हैं। उनमें से एक व्यवस्था का नाम है - सामाजिक नियंत्रण। सामाजिक नियंत्रण मुख्यतः दो प्रकार से किए जाते हैं। पहला समाजीकरण के द्वारा एवं दूसरा अनुशासनीय। किसी भी समाज में चाहे वह कोई भी जाति, धर्म, नस्ल या वंश का हो, जब कोई बच्चा जन्म लेता है तो न वह सामाजिक होता है, गैर सामाजिक और न ही असामाजिक। समाज में जन्म लेने वाला बच्चा समाज तटस्थ होता है। हर बच्चा हमेशा समाज तटस्थ होता है। उसे लिंग, जाति, वंश, नस्ल, धर्म, अमीर-गरीब, अन्य सांसारिक बातों का कोई ज्ञान नहीं होता है। उन्हें सही और गलत का भेद, माता-पिता अथवा अभिभावक के द्वारा ज्ञात होता है। समाज तटस्थ बच्चे को सामाजिक व्यक्ति बनाने की प्रक्रिया का नाम है - समाजीकरण।

बच्चा जब जन्म लेता है, तो पहला मानवीय मूल्य अपने माँ से प्राप्त करता है। माता-पिता से मानवीय गुणों एवं संवेदनाओं को प्राप्त करने के बाद परिवार में पालन-पोषण के दौरान कुछ अन्य मूल्य सीखते हैं, जैसे आपसी भाईचारा, सहयोग की भावना, सम्मान, परोपकार इत्यादि नैतिक मूल्य परिवार से ही प्राप्त करते हैं। फिर पड़ोस, स्कूल, कॉलेज इत्यादि जगहों से अन्य गुणों एवं मूल्यों को प्राप्त करते हैं। यही वह जगह है, जहाँ उन्हें हर प्रकार के गुणों से परिपक्वता हासिल होती है। माता-पिता जब पहली बार अपने बच्चों के मुँह से अपशब्द सुनते हैं, तो उन्हें लगता है कि हमारे बच्चे गालियाँ कहाँ से सीख गए जब कि परिवार में कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो अपशब्द का प्रयोग करता हो। यहाँ ध्यान देने वाली बात यह है कि कुछ माता-पिता या अभिभावक वह इस बात से भी हैरान-परेषान हो जाते हैं कि उनके बच्चे गालियाँ कहाँ से सीख गए, जो कि खुद अपने जमाने में गालियाँ बकने में महारथी थे। बच्चे अपशब्द एवं अश्लीलता, फिल्म, बाजार एवं अपने आस-पास रहने वाले विशेष दोस्तों के संपर्क में रहकर ही सीखता है।

कोई बच्चा पूर्ण रूप से सामाजिक होगा या गैर सामाजिक होगा या असामाजिक, यह तय होता है परवरिश की प्रक्रिया से अगर परवरिश थोड़ी सी गड़बड़ हुई तो वह गैर सामाजिक बनेगा। गैर सामाजिक बुरी बात नहीं है, वह अंतर्मुखी है। पूर्ण रूप से सामाजिक और गैर सामाजिक के बीच एक छोटी रेखा का अंतर है, इसे हम एक उदाहरण के द्वारा समझ सकते हैं। मान लेते हैं एक लड़का है जो बहुत खुशमिजाज है, मिलनसार है। वह सभी की शादियाँ, पार्टियाँ या अन्य कार्यक्रम में हिस्सा लेते हैं बल्कि जमकर अपनी उपस्थिति दर्ज करवाते हैं। दूसरों के कलह को सुलह करवाना उसकी फितरत है। समाज में बच्चे बड़ों सभी के साथ दोस्ताना, प्रेमभरा संबंध रखे तो इन्हें हम कह सकते हैं कि वह पूर्णतः सामाजिक है। अब वहीं दूसरी ओर एक लड़का जो अंतरमुखी है, उसे समाज में उठना, बैठना, मिलनसार होना पसंद नहीं है। वह जल्दी कहीं आना जाना पसंद नहीं करता है। वह अपने आप में और अधिकतर समय एकांत में मग्न रहता है। ऐसे लोगों को हम गैर सामाजिक कह सकते हैं।

समाज विरोधी या असामाजिक तत्व वह होते हैं, जो समाज में रहकर भी समाज का न हो पाए। जिनको लगता है मैं खुद अकेला हूँ तो वह कैसे युगल में या परिवार में रह सकते हैं। ये वो हैं जो सामाजिक मूल्यों को स्वीकार नहीं करते। इनके परिवर्तन में आवश्यकता से अधिक प्रताड़ित किया जाना, बचपन से बहिष्कार को झेलना ही इनकी सामाजिक प्रकृति को बदलकर इन्हें समाज विरोधी बना देता है। इस प्रकार के व्यक्तित्व विकृति वाले लोग समाज विरोधी या आक्रामक व्यवहार दिखलाकर दूसरों के अधिकारों की अवहेलना करते हैं। साथ ही किसी भी प्रकार के असामाजिक तथा अनैतिक कार्यों को करने में कोई हिचकिचाहट या संकोच नहीं करते हैं तथा इस प्रकार के कार्यों को करना वे अपना अधिकार समझते हैं।

अतः हम समझ सकते हैं कि समाज के निर्माण में समाजीकरण का क्या महत्व है। समाजीकरण का मूल कार्य है - बच्चे को मूल्य प्रबंध सीखाना। इसी प्रक्रिया से बच्चा समाज का आम हिस्सा बन जाता है और इससे व्यक्ति सामाजिक और सांस्कृतिक संसार में प्रवेश करता है। इससे वह समाज का और उसके विभिन्न समूहों का सदस्य बनता है। यह उस समाज की मान्यताओं को स्वीकार करने को प्रेरित करती है।

समाजीकरण के बाद सामाजिक नियंत्रण का दूसरा प्रकार है अनुशासनीय। सामाजिक मूल्यों को बनाए रखने के लिए, समाज में व्यवस्था कायम रखने के लिए अनुशासनीय तरीके का प्रयोग किया जाता है। इसे पुनः एक उदाहरण द्वारा समझते हैं। समाज में जो ठीक से व्यवहार करे, जो सामाजिक मूल्यों को आत्मसात करें उन्हें और बढ़ावा देने के लिए पुरस्कार दिया जाता है। उनका सम्मान किया जाता है ताकि बाकि लोग भी उससे प्रभावित होकर सीखें। पुरस्कार दरअसल उसको नहीं दिया जा रहा है, पुरस्कार उसको देकर बाकियों को प्रेरित किया जा रहा है ताकि उनके जैसा बनने का प्रयास करें और जो सामाजिक मूल्यों का हनन करते हैं, व्यवस्था को बिगड़ते हैं तथा अनुशासन भंग करते हैं उनके लिए दंड की प्रक्रिया होती है।

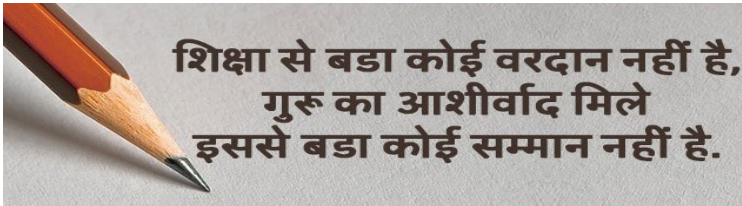
पुरस्कार और दंड की यह अनुशासनीय प्रक्रिया बच्चे के जन्म से ही शुरू हो जाती है। बाल्यावस्था से ही बच्चे को अच्छे कार्यों पर प्रशंसा, पुरस्कार इत्यादि दिए जाते हैं और गलत कार्यों पर शारीरिक या मानसिक दंड। स्कूल, कॉलेज में भी प्रोत्साहन हेतु सम्मान, प्रमाण पत्र, ट्रॉफी इत्यादि दिए जाते हैं और गलती करने पर शारीरिक दंड या जुर्माना लगता है। अच्छा अनुशासन स्थापित करने में 'पुरस्कार' और दंड महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पुरस्कार प्राप्ति की आशा दूसरों को अनुशासन में रखने के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। 'आशा' और 'डर' को छोड़ दिया जाए तो समूचा अनुशासन समाप्त हो जाएगा।

पुरस्कार देना अनुशासन स्थापन में कहीं तक उपयोगी है यह विचारणीय प्रश्न है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि पुरस्कार विद्यार्थियों को प्रोत्साहित करते हैं, तथा पुरस्कार प्राप्त करने के लिए विद्यार्थियों में परिश्रम की प्रकृति का विकास होता है और यह आत्म-विश्वास उन्हें अधिक से अधिक प्रगति के लिए प्रेरित करता है। बालक/बालिका के पुरस्कृत होने से माता-पिता को संतुष्टि होती है। इतनी उपयोगिताओं के उपरांत पुरस्कारों के आलोचना भी की जाती है। कई शिक्षाविदों का विचार है कि 'पुरस्कार' विद्यार्थियों में प्रलोभन की प्रवृत्ति का विकास करता है। वह कोई काम कर्तव्य समझ कर नहीं करते, बल्कि पुरस्कार प्राप्त करने के प्रलोभन से करते हैं। 'पुरस्कार' प्राप्ति की होड़ में विद्यार्थी परस्पर ईर्ष्या का शिकार भी हो जाते हैं। 'पुरस्कार' में दो-चार व्यक्ति ही प्रोत्साहित होते हैं और अध्यापक भी उन्हीं की ओर अधिक ध्यान देने लगते हैं। फलस्वरूप अन्य विद्यार्थी उपेक्षा का शिकार हो जाते हैं। पूरे वर्ग को प्रोत्साहित करने में पुरस्कार विशेष भूमिका नहीं निभा पाता। परंतु एक सत्य यह भी है कि पुरस्कारों के माध्यम से व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित किया जाता है। प्रोत्साहन या पुरस्कार व्यक्ति की कार्यक्षमता को बढ़ाता ही है साथ ही अच्छे कार्यों के लिए प्रेरित भी करता है।

प्रथाओं और परंपराओं का पालन करने की कोशिश करता है, जो समाज उसे एक सम्मान जनक स्थिति प्रदान करता है। उदाहरण के लिए स्कूल, कॉलेज में विद्यार्थियों को तथा समाज में उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्ति को पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया जाता है।

जहां एक ओर समाज में प्रोत्साहन या पुरस्कारों द्वारा व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित किया जाता है वहीं दूसरी ओर दंड के माध्यम से भी व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित किया जाता है। समाज द्वारा स्वीकृत नियमों, आदर्शों, मूल्यों तथा प्रथाओं का उल्लंघन करने पर व्यक्ति को अपराध के स्वरूप के आधार पर सामान्य से मृत्यु दंड तक दिया जाता है। यही कारण है कि व्यक्ति आदर्शों के विपरीत आचरण नहीं करते या करने से डरते हैं। यदि व्यक्ति समाज विरोधी कार्य करता है और सामाजिक नियमों की अवहेलना करता है, तो समाज उसे दंड देता है जिससे कि वह भविष्य में उन गलतियों को न दोहराए।

अतः पुरस्कार एवं दंड वह प्रक्रिया है जो समाज निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। किसी भी संगठन, संस्था या विभाग के विकास में यह प्रक्रिया अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। पुरस्कार से उत्पादकता बढ़ती है और दंड अनुशासन बनाए रखने में सहायक सिद्ध होती है।



: कुंदन कुमार राउत :
कनिष्ठ अनुवादक /पालक्काड

अधूरी अभिलाषा

'फोन की घंटी सुनकर जब बंटी ने फोन उठाया तो दूसरी ओर से आवाज आई '

'बंटी, आ जाओ, अब वह इस दुनिया में नहीं रही।' यह सुनते ही बंटी के मन में सारी बातें चलचित्र की भाँति घूमने लगी। प्रियम से निभाए गए वादों, उसकी सभी हसीन यादों में वह डूबने-उतराने लगा। भरे मन से उसने फोन रखा और वहीं कुर्सी पर बैठ गया। वह सोचने लगा कि किस तरह प्रियम के घरवालों ने उसकी शादी कहीं और तय कर दी और दोनों के लाख चाहने के बावजूद एक-दूसरे से बिछड़ना पड़ा। क्योंकि प्रियम के पापा ने जान देने की धमकी दे डाली थी। समय बीता, नदियों में जाने कितना पानी बह गया। अचानक उसे पता चला कि प्रियम अब बेवा है और वापस घर रहने आ गई है क्योंकि ससुराल वालों ने उसे बाहर निकाल दिया था कुलक्षण मानते हुए। आखिर शादी तो बंटी ने भी नहीं करने की कसम खा ली थी और इसे ही अपनी नियति मान लिया था। एक दिन बाज़ार में अचानक प्रियम सफेद साड़ी में दिखी तो वह खुद को रोक ना पाया और सामने खड़ा हो गया। प्रियम की आँखें पनीली हो उठी। उसने कहा कि अब यही हमारी किस्मत है बंटी, भूल जाओ मुझे। बंटी ने उसे समझाया कि ऐसा नहीं हो सकता, लेकिन हम ज़रूर एक हो सकते हैं, मैं तुम्हारे घरवालों से बात करूँगा और उसके पापा इस बार मान भी गए। ऐसा लगा जैसे जीवन पुनः पटरी पर आ रहा हो लेकिन दुर्भाग्यवश कुछ दिनों बाद ही प्रियम का एक्सीडेंट हो गया और आज ये फोन ...बंटी उठा और चल पड़ा अस्पताल अपनी प्रियम के पास क्योंकि अब इससे ज़्यादा भगवान भी उन्हें अलग नहीं कर सकते थे।



: मनोज कुमार यादव :
पोस्ट कमांडर/रेसुब/मंगलूरु

रेल गाडी

छुक-छुक करती आती रेल
छुक-छुक करके जाती रेल
दूर सुदूर पहुँचाती रेल
दिलों को मिलाती रेल ।



रेल की पटरी सीमा पार कर
जोड़ती देश भर के राज्यों को
एकता का यह पाठ पढ़ाती
लोगों में यह मेल बढ़ाती

हरे भरे खेत दिखलाते
मंद पवन तन मन को भाते
बहती नदियों के दृश्य अनूठे
मनमोहक है ये सारे नज़ारे ।

गाडी कहती सब लोगों से
आओ तुम सब मेरे संग
देश हमारा कितना सुन्दर
ये है प्यारा भारत हमारा ।

माला में पिरोए फूलों जैसे
कई डिब्बों से बनी रेलगाडी
देश के कोने- कोने को यह
जोड़ कर सुन्दर माला बनाती ।



रेलगाडी का सफर
है यह बड़ा निराला
हौले हौले हिचकोले लेता
छुकछुक के लय में भिगोता

रेल है भारत की जान
इससे हमारी पहचान
इससे बढ़ती अपनी शान
ये भारत का अभिमान

: उणिक्कृष्णन नंबूतिरी के.वी :

भेषजज्ञ/कण्णूर

जीवन में खुशी



मैं अंजू बी. शेणॉय रेलवे के वाणिज्य विभाग में काम करती हूँ। आज हम आधिकारिक बातचीत नहीं करेंगे बल्कि कुछ अनौपचारिक बातचीत करेंगे। जीवन के बारे में मेरे कुछ विचार यहाँ प्रस्तुत करना चाहूँगी।

हमारे जीवन में जल वायु और आहार के बाद जो अनिवार्य होता है वो है खुशी और शांति। खुशी व्यक्तिपरक है, जो चीज़ एक व्यक्ति को खुश करती है ज़रूरी नहीं कि वह दूसरे को भी ऐसे ही महसूस कराए। खुशी व्यक्तिपरक होने के बावजूद और भी कुछ बुनियादी ज़रूरी चीज़ें हैं जो सभी के जीवन में खुशियों ला सकती हैं।

1. पहला है स्वास्थ्य : आपका स्वास्थ्य खुशी का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। यह केवल शारीरिक स्वास्थ्य ही नहीं बल्कि मानसिक और भावनात्मक भी है (Physical, mental & emotional) ये तीन रूपों में स्वास्थ्य नहीं है तो ये समझिये कि आप जीवित हैं पर नहीं जी रहे हैं। शारीरिक मानसिक और भावनात्मक रूप से अपना ख्याल रखने के लिए पूरा प्रयास करें। अच्छा खाएँ, व्यायाम करें, दोस्तों से मिलें, ट्रावल करें कोई हॉबी या मनोरंजन का उपाय चुनें, ईश्वर से संवाद करें (ये काल्पनिक लग सकता है पर मन की स्वास्थ्य के लिए बहुत लाभदायक है। घर के हों या बाहर के सभी लोगों से अच्छा व्यवहार करने की कोशिश करें।
2. दूसरा है पैसा : निश्चित रूप से अपने और अपने प्रियजनों की देखभाल करने में सक्षम होने के लिए पर्याप्त धन होना एक आवश्यकता है। पैसे की अपनी भूमिका होती है लेकिन यह मत सोचिए कि पैसा सब कुछ है।
- 3.. रिश्ते (Relationship): आपको अपने जीवन में ऐसे लोगों की आवश्यकता है जो आपकी परवाह करते हैं और आपसे प्यार करते हैं। जिन लोगों के साथ आप हँस सकते हैं, रो सकते हैं, गले लगा सकते हैं। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के नाते ये सब उसकी खुशी के लिए अनिवार्य है।
4. काम पर संतोष : क्या आप कभी कभी काम में निराश होते हैं ? बिल्कुल ! लेकिन कुल मिलाकर आपका काम आपके लिए सिर्फ तनख्वाह से बड़कर होना चाहिए। बीस वर्ष की मेरी रेलवे सर्विस में एक front line staff होने के नाते मैं ने सीखा है कि public से अच्छा और सभ्य व्यवहार करने पर जो positivity पैदा होती है वो हमारे और उनके जीवन में शांति और एक अच्छी अनुभूति लाती है।
5. प्रेम और स्वयं की स्वीकृति : इसका सीधा सा मतलब है कि अपनी ताकतों के साथ-साथ अपनी कमजोरियों को भी आप जाने और स्वीकार करें।

अंत में स्वास्थ्य, पैसा, रिश्ते, काम पर संतोष और आत्म स्वीकृति की पांच अनिवार्यताएं आपकी खुशी का आधार बनती हैं।

अंजू बी. शेणॉय
मुख्य वाणिज्य लिपिक/घोणूर

परिवार नियोजन व जे सी बी



एक बार एक ग्राम में परिवार नियोजन का कार्यक्रम तय हुआ जिसमें सभी ग्रामवासियों को सूचित किया गया निश्चित समय पर डी एम तथा अन्य गणमान्य उपस्थित हुए।



लंबे चौड़े भाषण से कार्यक्रम प्रारंभ हुआ
इधर परिवार नियोजन कार्यक्रम प्रारंभ हुआ
उधर ग्राम में जेसीबी से सफाई
का प्रोग्राम शुरू किया गया
ज्योंहि जेसीबी ने चलना प्रारंभ हुआ
उधर लोगों का जाना शुरू हुआ।

हुआ यूं कि परिवार नियोजन में जो भीड़
बुलाने से भी नहीं जुटी थी
उससे ज्यादा भीड़ जेसीबी को देखने में थी
यह सब देखकर डी एम साहब ने पूछा
यह लोग कहां जाते हैं ?

चारों तरफ सन्नाटा छा गया
तभी कोई बीच में से बोल गया
गांव में मशीन आई है, जिसका काम है सफाई
यहां भीड़ आमंत्रण देकर बुलाई है
वहां भीड़ बिन बुलाई है।

इतना सुनकर जेसीबी बंद कराई, तब जाकर सभा
सुचारू रूप से प्रारंभ कराई
परिवार नियोजन तथा नसबंदी के फायदे समझाएं।
इतने में एक शख्स बीच में बोल उठा
साहब क्या आपने नसबंदी कराई
या आपके अफसर ने यह कराई ?

डी एम साहब तब बोले नहीं - नहीं
हम पढ़े लिखे लोग हैं, हमको ज्ञान है, संयम अपार है
साथ में छोटा परिवार सुखी परिवार इसका
भी ज्ञान है इसलिए हम लोगों ने नसबंदी नहीं कराई

तभी वह शख्स फिर बोल उठा
आप साहब ज्ञान का भंडार है
आप और आपकी सरकार की माया अपरंपार
तो आप लोग हमको भी शिक्षित बनाइए
विद्यालय खुलवाकर शिक्षा दिलाइए
नसबंदी कराके नपुंसक मत बनाइए
हम भी पढ़ लिख जाएंगे आपकी तरह
अफसर ना सही समझदार बन जाएंगे

: प्रवेश कुमार निमेश :
व. टिकट परीक्षक/श/पालक्काड

मीनू की दौड़

रेलवे कॉलोनी के छोटे खेल के मैदान में आज अलग ही चहल पहल थी, क्योंकि कॉलोनी में स्थित एक नर्सरी स्कूल के बच्चों की आज खेल प्रतियोगिता थी। सभी छोटे बच्चे आज उत्साहित नजर आ रहे थे, कोई मम्मी के साथ आया, कोई पापा के साथ, किसी-किसी के मम्मी-पापा दोनों साथ थे।

साढ़े चार साल की एक छोटी बच्ची मीनू अपने पापा के साथ आई हुई थी, मम्मी तो छोटे मोटे घरेलू कार्यों में व्यस्त थी फिर उसे छोटे भाई का ध्यान भी रखना था इसलिए पापा ही आए थे।

पहली प्रतियोगिता दौड़ शुरू होने में अभी थोड़ा समय था, पापा ! वो लड़की हमारी क्लास में है उसके साथ तो उसके मम्मी पापा दोनों आए हुए हैं, एक दूसरी छोटी लड़की की तरफ इशारा करते हुए मीनू ने कहा।

पापा ने हां में सिर हिला दिया। और थोड़ी देर बाद बोले बेटा ! अभी दौड़ होने में थोड़ा समय है आप अपनी क्लास टीचर के साथ रहो, मुझे कुछ काम है घर जाके आता हूं, कहकर पापा चले गए। 15 मिनट गुजर गए दौड़ स्टार्ट होने वाली थी, क्लास टीचर ने 25 छोटे बच्चों के साथ मीनू को भी लाइन में खड़ा कर दिया था, मीनू चिंतित मुद्रा में बार-बार ग्राउंड के गेट की तरफ देख रही थी।

सीटी बजते ... ही सारे बच्चे अपने नन्हें कदमों के साथ दौड़ पड़े, प्रथम तीन बच्चों को पुरस्कार मिलना था, सबका एक ही लक्ष्य सबके आगे निकलना। जैसे ही दूसरा चक्कर स्टार्ट हुआ, परिजनों की आवाजें गूंज उठी और तेज ... तेज... और तेज..., मीनू के लिए सारी आवाजें अनजानी सी थी फिर भी उसने दौड़ जारी रखी। वो लगभग बीच में दौड़ रही थी। दौड़ समाप्त हुई, प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान पर आए बच्चों को टीचर ने रोक लिया बाकी बच्चें अपने अपने परिजनों के पास चले गए।

छोटी बच्ची मीनू मैदान में एक छोटे पेड़ के नीचे बैठे एकटक गेट की ओर देख रही थी, कि उसने दिखा कि पापा आ रहे हैं वो दौड़ कर उनके पास चली गई, अरे इस बार तो मम्मी भी साथ है और मम्मी की गोद में उसका प्यारा एक साल का 'ध्रुव' भी। वह बहुत खुश हुई और साथ ही नाराजगी जताते हुए बोली, आप जल्दी नहीं आए दौड़ तो हो गई।



सॉरी बेटा ! आपको भूख लगेगी सोचकर मैं आपके लिए एक आलू का पराठा बनाने लग गई थी, इसलिए हम लेट हो गए, आप दौड़ में जीत गई अब पराठा खाओ, एक छोटे टिफिन को खोलते हुए मम्मी बोली।

लेकिन पापा ! मम्मी बोल रही है मैं जीत गई, लेकिन मेरे से आगे तो कोई 'टेन' लड़के लड़की थे, पराठा खाते हुए मीनू बोली। 'अरे बेटा, तुम्हारे पीछे कितने बच्चे थे ? 'थोड़ा जोड़ घटाकर वो बोली : फिफ्टीन बच्चे।' तो तुम फिफ्टीन बच्चों से जीत गई, पापा बोले। सुनकर मीनू खुश हुई।

अब आप दूसरी प्रतियोगिता के लिए तैयार रहो, उसमें आप पक्का फर्स्ट प्राइज जीतोगी। सच्ची ? पापा ! हां ! बिल्कुल क्योंकि पहले तो हम यहां नहीं थे, अब हम भी तो हैं आपके साथ। ज्यादा इंतज़ार नहीं करना पड़ा, कुछ आधा घण्टे बाद 'फिलिंग द ग्लास' नामक दूसरी प्रतियोगिता शुरू होने वाली थी, उस छोटी बच्ची को एक बार फिर से मौका मिला कुछ कर दिखाने का।

पापा ! यह तो मैं कर सकती हूँ। मीनू की आँखों में आत्मविश्वास की चमक साफ दिखाई दे रही थी। इस बार मीनू का उत्साह दुगना था क्योंकि इस बार उसके अपने, उसका उत्साहवर्धन करने के लिए उसके सामने खड़े थे। एक बार फिर से सीटी की आवाज के साथ साथ वहीं, परिजनों की तेज... तेज, जल्दी की आवाजें कानों में गूंज रही थी। पर इस बार इस बच्ची को लग रहा था मानो वे सभी आवाजें उसके लिए थीं।

अक्सर बरसात के मौसम में गांव के घर की छत एवं आंगन में रूके कुछ पानी को नन्हें हाथों से भर भर के पूरा जग भर दिया करती थी। हालाँकि इस खेल में वह पूरी भीग जाती थी।

वह आज उसी खेल में प्रथम पुरस्कार जीत चुकी थी।

: देवी सिंह मीना :

चल टिकट निरीक्षक/श/पालक्काड

छिपा हुआ प्रेम



एक दिन पेड़ के नीचे बैठे हुए मुरली को देखकर मुत्तु ने पूछा कि मुरली ! तुम क्या सोच रहे हो ? अचानक ध्यान भंग होने पर मुरली ने पीछे मुड़कर देखा और बोला - बच्चों को खेलता देखकर बहुत खुशी हो रही है। वे बहुत मासूम हैं। मेरी भी एक बहन थी जिसका नाम मधु था। वह तीन साल की उम्र में ही मर गई। मुत्तु ने पूछा - 'कैसे ?' मुरली ने कहा - यह एक लंबी कहानी है।

बहुत साल पहले की बात है। मेरे पिता शराबी थे। शराब पीकर रोज मेरी माँ को मारते-पीटते थे। हमें उनसे बहुत डर लगता था। अक्सर माँ को मार खाते देखकर, हम भाई-बहन बाहर अंधेरे में छिप जाते थे। एक रात पिताजी काफी शराब पीकर घर आए और नशे की हालत में ही माँ को मारने-पीटने लगे। हम दोनों भाई-बहन घबराहट के कारण घर के बाहर झाड़ी में छिप गए। रात का समय और घोर अंधेरा था। उसी समय मधु के पैर में सांप काट लिया। बाद में उसने माँ से कहा। माँ ने इसे गंभीरता से नहीं लिया। कुछ देर बाद वह गिर गई और बेहोश हो गई और बिना इलाज के तड़प-तड़प कर मर गई।

मेरे पिता के इस व्यवहार के कारण मेरी माँ ने मुझे अनाथालय भेज दिया। मुत्तु ने दुःख प्रकट करते हुए कहा - मेरी उम्र जब दो वर्ष थी तब किसी बीमारी के कारण मेरे माता-पिता का देहांत हो गया। तब मेरी दादी ने मुझे संभाली। उन्होंने ही मेरा लालन - पालन किया। गरीबी और निर्धनता के कारण दादी ने मुझे अनाथालय भेज दिया। दोनों अपनी-अपनी व्यथा सुनाकर अश्रुमय हो गए।

इस तरह दसवीं की परीक्षा उत्तीर्ण होने के बाद दोनों काम की तलाश में अलग-अलग हो गए। मुरली नौकरी की खोज में तमिलनाडु के कोयंबतूर चला गया जहाँ उसे एक होटल में काम मिल गया। तनख्वाह काफी कम थी परंतु माँ के लिए उन्हें वह काम लेना पड़ा। हर महीने वह माँ के लिए कुछ पैसे भेजने लगा। एक दिन होटल के मालिक ने अपने गाड़ी और ड्राइवर के साथ बहुत सारे सामान लाने के लिए सेलम भेजा। लौटते वक्त रास्ते में गाड़ी दुर्घटनाग्रस्त हो गई और मौके पर ही ड्राइवर की मौत हो गई। चोट के कारण मुरली बेहोश हो चुका था। मुरली को स्थानीय लोगों ने अस्पताल पहुंचाया। होश आने पर मुरली आई सी यू में था। उसके गर्दन पर गंभीर चोट आई थी और इसी कारण उसके गर्दन के नीचे कोई अंग काम नहीं कर रहा था। सेलम काफी गर्म क्षेत्र था।

तीन-चार महीने तक मुरली को सरकारी अस्पताल में रहना पड़ा। पानी का अभाव, गंदगी और तकलीफों से उबरने के बाद मुरली का दोनों हाथ काम करने लगा परंतु वह उठने और बैठने में अब भी असमर्थ था। मुरली को 'करुणालय' भेज दिया गया जहाँ अनाथ रोगियों को मुफ्त में भोजन दिया जाता था। मुरली के लिए हर दिन एक रात और हर रात एक दिन था। वह पुस्तक पढ़ा करता था और पेंसिल से चित्र बनाया करता था। कुछ साल बीतने के बाद मुरली द्वारा बनाए गये चित्र काफी प्रसिद्ध होने लगे और लोग खरीदने लगे। एक बार अमेरिकी युवक भारत घूमने आया था उसे मुरली और उसके चित्र के बारे में जानकारी मिली। वह मुरली से मिला और उसके चित्र को काफी सराहा। वह मुरली का संपूर्ण इलाज करवाने के लिए उसे अपने साथ अमेरिका ले गया।

कई वर्षों के शारीरिक और मानसिक परेशानियों से इतर मुरली को अमेरिका जाकर बहुत अच्छा महसूस हुआ। वहां मुरली का बहुत अच्छी तरह इलाज हुआ और अब मुरली व्हील चेयर पर बैठ पाने में सक्षम था। उसने अमेरिका के राष्ट्रपति का चित्र बनाया। चित्र काफी अद्भुत और सजीव था। चित्र को मिलियन डॉलर में खरीदा गया और मुरली को सम्मानित किया गया।

अब मुरली को अपने माँ की बहुत याद आने लगी। उसकी आँखें आँसुओं से भरा हुआ था पता नहीं माँ किस हाल में होगी और कहाँ होगी। वह बिना देर किए हवाई जहाज से भारत आ गया वह अनाथालय पहुँचा परंतु वहाँ माँ नहीं थी। मालूम चला कि पिताजी अब भी माँ को मार-पीटकर अनाथालय में उनको तिरस्कृत किए हैं। किसी ने बताया कि माँ को एक आदमी अपने साथ ले गया। मुरली ने उस आदमी का पता लगाया और उसके घर पहुँचा। घर में माँ को पाकर काफी खुश हुआ और माँ को पकड़कर बहुत देर रोया। जिस आदमी ने उसके माँ को अनाथालय से घर लाया था वह मुत्तु ही था। मुरली, मुत्तु के पैरों पर गिर पड़ा। मुत्तु, मुरली दोनों रोने लगे। मुत्तु ने बताया कि मुरली की तलाश में दो वर्ष पहले माँ से मिला और माँ की दुर्दिन स्थिति को देखकर माँ को घर ले आया था। मुत्तु के इस छिपे हुए प्रेम को देखकर मुरली अपने आप को दुनिया का सबसे भाग्यवान व्यक्ति समझा। अब मुत्तु, मुरली, माँ साथ रहने लगे और उनकी जिंदगी की आर्थिक दरिद्रता खत्म हो गई।

मेरिकुट्टी कुरियाकोस

मुख्य नर्सिंग अधीक्षक/रे अ/पालक्काड

जिंदगी

छोटी सी है जिन्दगी
कल किसने देखा है ...
जो चेहरा पास न हो
उसकी आवाज़ में खुश रहो।
जो हमारे पास हो
उसको अपना समय दो।
कोई रूठा हो आप से
उसके अंदाज में खुश रहो।
जो हमसे दूर चला गया हो
उसकी याद में खुश रहो।
हाल कैसा भी हो
हर बात में खुश रहो।
कल किसने देखा है
अपने आज में खुश रहो



अंजली पी

वरिष्ठ वाणिज्य लिपिक/पालक्काड

आज़ादी का अमृत महोत्सव

आज़ादी का अमृत महोत्सव स्वतंत्र एवं प्रगतिशील भारत की 75 वीं वर्षगांठ को मनाने का एक तरीका है, भारत सरकार की एक विशेष पहल है। यह भारत के लोगों, संस्कृति और उपलब्धियों के गौरवशाली इतिहास को जानने व मनाने के लिए है। यह महोत्सव भारत की जनता को समर्पित है, जिन्होंने भारत की विकास यात्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह हमारे आज़ादी के नायकों के त्याग, तपस्या और बलिदान को याद करने का एक अवसर है।

आज़ादी का अमृत महोत्सव भारत की सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक पहचान को प्रगति की ओर ले जाने वाली सभी चीजों का एक मूर्त रूप है। इस अमृत महोत्सव की आधिकारिक यात्रा 12 मार्च 2021 को शुरू हुई और यह 15 अगस्त 2023 को समाप्त होगी। इस महोत्सव का उद्देश्य लोगों के मन में देशभक्ति की भावना को पैदा करना है।

अमृत महोत्सव के कार्यक्रम : आज़ादी का अमृत महोत्सव में निम्नलिखित पांच थीम हैं :-

1) स्वतंत्रता संग्राम 2) विचार @ 75 3) समाधान @ 75 4) कार्य @ 75 5) उपलब्धियां @ 75

1 स्वतंत्रता संग्राम : यह स्वतंत्रता सेनानियों पर ध्यान केंद्रित करता है, जिन्होंने भारत को अंग्रेजों से स्वतंत्रता प्राप्त करने में मदद की थी। यह कार्यक्रम उन गुमनाम नायकों की कहानियों को याद करना है जिनके बलिदान ने हमारे लिए स्वतंत्रता को वास्तविक बना दिया है। भारत के आज़ादी की ऐतिहासिक यात्रा के मील के पथर, स्वतंत्रता आंदोलनों को याद कर प्रेरित होने का उत्सव है।

2 विचार @ 75 : यह विषय उन विचारों और आदर्शों पर केंद्रित है जिन्होंने अब तक भारत को आकार दिया है और अगले 25 वर्षों तक मार्गदर्शन करेंगे। इस विषय के कार्यक्रमों और पहलू में काशी उत्सव और 'प्रधानमंत्री को पोस्टकार्ड' शामिल है।

3 समाधान @ 75 : यह विषय भारत के भाग्य को आकार देने के सामूहिक संकल्प और दृढ़ संकल्प पर केंद्रित है। इस विषय के कार्यक्रमों में संविधान दिवस, सुशासन सप्ताह आदि पहलू शामिल हैं।

4 कार्य @ 75 : यह विषय उन सभी प्रयासों पर केंद्रित है जो वर्तमान में भारत को विश्व पर अपनी स्थिति बनाने के लिए सरकार द्वारा किए जा रहे हैं। इसका आह्वान है सबका साथ सबका विकास सबका विश्वास सबका प्रयास। इसमें सरकारी नीतियों, योजनाओं, कार्य योजनाओं के साथ-साथ व्यवस्थाओं और सरकारी संगठनों, नागरिक समाज की प्रतिबद्धताओं को भी शामिल करना जो हमारी विचारों को साकार करने में मदद करते हैं। इस विषय के तहत कार्यक्रमों में गति शक्ति, मल्टीमॉडल कनेक्टिविटी के लिए नेशनल मास्टर प्लान आदि शामिल हैं।

5 उपलब्धियां @ 75 : यह विषय भारत के प्राचीन इतिहास से लेकर आज के 75 वर्षीय स्वतंत्र देश तक के सभी सामूहिक उपलब्धियों पर प्रकाश डालता है। इस विषय के कार्यक्रमों में 1971 की जीत के लिए समर्पित स्वर्णिम विजय वर्ष, महापरिनिर्वाण दिवस आदि शामिल हैं।

इन थीम की सहायता से भारत की स्वतंत्रता की महान यात्रा का पुनरावलोकन और स्मरण किया जाएगा। इसके साथ ही सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक रूप से भारत की ताकत को मजबूत करने के लिए एक रोड मैप भी हासिल करने की योजना बनाई जाएगी।

हर घर तिरंगा : भारत सरकार ने आज़ादी का अमृत महोत्सव के अवसर पर 'हर घर तिरंगा' अभियान शुरू किया गया ताकि राष्ट्रीय ध्वज के साथ हमारा संबंध हमेशा से अधिक औपचारिक और संस्थागत रहा, वह व्यक्तिगत संबंध बने और राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा के बारे में जागरूकता पैदा हो। यह राष्ट्र-निर्माण के प्रति हमारी प्रतिबद्धता का प्रतीक भी बन जाता है। इस पहल के पीछे का विचार लोगों के दिलों में देशभक्ति की भावना को जगाना है।

आज़ादी के 75 वीं वर्षगांठ के अमृत महोत्सव में भारत अपनी 75 साल की उपलब्धियां, 75 साल के विचार 75 साल के कार्य और 70 साल पर संकल्प शामिल हैं जो स्वतंत्र भारत के सपनों को साकार करने के लिए और आगे बढ़ने के लिए प्रेरणा देगा।

लक्ष्मी विश्वनाथन

व.सेक्शन इंजीनियर/बि प्र/पालक्काड

देवभूमि मनाली....

जीवन, एक घड़ी की सुई की तरह निरंतर चलती रहती है और हम मशीनीकृत रोबोटों की तरह इस जीवन रूपी दलदल में इस कदर फंस जाते हैं कि खुशी के दो पल भी नसीब नहीं होते और एक क्षण ऐसा आता है, जो अंग्रेजी कहावत “The straw that broke the camel’s back” का straw बन जाता है। ऐसे समय में हमें नियमित जीवन की एकरसता से बचने के लिए एक ब्रेक की आवश्यकता होती है अन्यथा हम अपना विवेक खो सकते हैं।

हम भी हर साल इस तरह के छोटे-छोटे ब्रेक लेते हैं और कहीं न कहीं घूमने जाते हैं जिसका लक्ष्य एक ताज़ा बदलाव और परिवार का एक साथ कुछ समय बिताना होता है। इस बार मैंने केरल की गर्मी की तीव्रता से बचने के लिए कुल्लु-मनाली जाने का फैसला किया। मैं, पति और मेरी छोटी बेटी। कहते हैं तीन तिगाड़ा काम बिगाड़ा होता है, पर हमारे लिए तीन ही कंपनी है। हम रेलगाड़ी से दिल्ली गए, वहां से मनाली के लिए बस पकड़ी। बस से यात्रा भले ही आरामदायक थी पर मैं कभी भी रेल गाड़ी से यात्रा करना पसंद करूंगी। कुल्लु-मनाली का रास्ता अत्यंत खतरनाक, खूबसूरत और घुमावदार है। 13 घंटे की लंबी और थकाऊ यात्रा के बाद हम मनाली पहुंचे।

जिस क्षण आप हिमाचल प्रदेश में प्रवेश करते हैं, आपका मन खुश हो जाता है। हल्की संद परंतु ताज़ी हवा, पहाड़ों को काटती लंबी घुमावदार सड़कें, राजसी बर्फीले पहाड़, लगता है स्वर्ग तक पहुँचते हैं, सफेद बादल धुंधले पहाड़ों को ढँकते हैं और गले लगाते हैं, जैसे लंबे समय से खोए जोड़े कभी न खत्म होने वाली लुका-छिपी खेल रहे हो। हर्षित, गड़गड़ाहट करती व्यास नदी कहीं तीव्र वेग से बह रही है, तो कहीं संगीतमयी ध्वनि के साथ चुलबुली लेकिन सुखदायक चाल से लचक रही है। देवदार से लदी सुंदर घाटियाँ, ऊँचे खड़े विलो शंकुधारी वृक्षों से भरी वादियां अपनी सुंदरता से किसी का भी मन को मोह लें। जंगल में भी गुलाब और अन्य फूल बहुतायत में खिलते हैं। सेब, खुबानी और चेरी के बाग फलों से लदे हुए हैं। सुबह के सूरज की सुनहरी किरणों में झिलमिलाती ओस की बूंदों से झिलमिलाता पूरा परिदृश्य मंत्र मुग्ध कर देने वाला था।



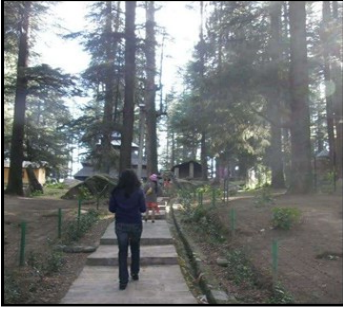
अक्तूबर-नवंबर महीने में कुनकुनी धूप वाला मौसम आरामदायक था। अपने होटल में चेक इन करने के बाद हम टहलने निकल गए।

मॉल रोड

मनाली का नामी मॉल रोड..... मॉल रोड में कई शोरूम, डिपार्टमेंट स्टोर, दुकानें, रेस्तरां और कैफे हैं। एक हिमाचल एम्पोरियम जो स्थानीय रूप से डिज़ाइन किए गए ऊनी कपड़े, ब्रांडेड कपड़े, मिट्टी के बर्तन, लकड़ी के उत्पाद और आभूषण जैसे हिमाचल प्रदेश के हस्तशिल्प उत्पादों को प्रदर्शित करता है। चारों ओर से पहाड़ियों से घिरा हुआ ये बाजार और चौराहा शॉपिंग के लिए मशहूर है। यहां बेंच पर बैठ कर देशी-विदेशी पर्यटकों को मोलभाव करते देखना, बच्चों का चीखना-चिल्लाना और खेलना-कूदना आदि मन के लिए सकूनदायक है। हाथ में हाथ डाले घूमते, लगातार सेल्फी लेते हनीमून जोड़ों का नज़ारा भी बड़ा खुशनुमा है।



हिडिंबा का मंदिर



यह सर्किट हाउस के पास लगभग 15-20 मिनट की पैदल दूरी पर है। यह एक प्राचीन गुफा मंदिर है, जो भारतीय महाकाव्य महाभारत के भीम की पत्नी हिडिम्बा देवी को समर्पित है। यह मनाली में सबसे लोकप्रिय मंदिरों में से एक है। इसे दुंगरी मंदिर के नाम से भी जाना जाता है। यह मंदिर एक चार मंजिला संरचना है जो जंगल के बीच में स्थित है। इस मंदिर में देवी की कोई मूर्ति स्थापित नहीं है बल्कि हिडिम्बा देवी मंदिर में हिडिम्बा देवी के पदचिह्नों की पूजा की जाती है।

रोहतंग पास

13,051 फीट या 3978 मीटर की ऊंचाई पर स्थित यह पीर पंजाल रेंज पास मनाली जाने वाले हर पर्यटक के लिए अनिवार्य संदर्शन का स्थल है। यह कुल्लू घाटी को लाहौल-स्पीति घाटी से जोड़ता है। यहाँ साल भर बर्फ का आनंद लिया जा सकता है। यहां संदर्शकों की अत्यधिक भीड़ रहती है।



सोलंग घाटी



ये जगह पर्वतारोहण और स्कीइंग आदि संबद्ध खेलों में रुचि रखने वालों के लिए है। यदि आप साहसिक खेलों से प्यार करते हैं, तो आपको यह जगह बहुत रोमांचक लगेगी। ये पूरे वर्ष बर्फ से ढकी रहती है और यहाँ से ग्लेशियर्स का नज़ारा देखने लायक है।

मणिकरन

यह व्यास और पार्वती नदियों के बीच स्थित एक हिंदू और सिख तीर्थस्थल है। यहाँ का हॉट स्प्रिंग दुनिया भर में प्रसिद्ध है। कहा जाता है कि यहाँ के गुरुद्वारे का लंगर इसी पानी में पकता है। हम लोगों ने भी उस लंगर का स्वाद उठाया। हमने हाट स्प्रिंग में स्नान भी किया। कहते हैं यह पानी कई बीमारियों के लिए दवा का काम करती है। इस तरह खूबसूरत नज़ारों का लुत्फ उठाते तीन चार दिन कैसे निकल गए पता ही नहीं चला। हमने थोड़ा ट्रेकिंग, रिवर राफ्टिंग



और रिवर क्रासिंग आदि साहसिक खेलों का लुत्फ भी उठाया। कुछ ऊनी कपड़े और साड़ी आदि की शॉपिंग भी की। जीवन में आनंद का और आनंद में यात्रा का बहुत महत्व है। मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम सभी को खुद को फिर से जीवंत करने और परिवार के बंधन को मजबूत बनाने के लिए इस तरह के ब्रेक लेने चाहिए। आधुनिक समय में जब टीवी और मोबाइल हमें एक-दूसरे से दूर ले जा रहे हैं, इस तरह की पारिवारिक यात्राएं हमें करीब लाती हैं और किसी भी कीमत पर पारिवारिक संबंधों को बेहतर बनाना समय की मांग है।

मनाली की इस देवभूमि को देखकर हमारा मन तरोताजा हो गया और हम रोजमर्रा की परेशानियों से झूझने के लिए पूरी तरह रिचार्ज हो गए।

: निपुणा शशिधरन :

व.अनुवादक/पालक्काड

गाड़ी प्रबंधक की कलम से

‘गुड्स गार्ड’ जिन्हें आजकल ‘गाड़ी प्रबंधक’ के नाम से भी लोग जानने लगे हैं, देश की जीवन रेखा ‘भारतीय रेल’ के सेवा में लगी एक महत्वपूर्ण वर्ग है। ‘गुड्स गार्ड’ के रूप में अपने अनुभवों को मैं ‘चिराग पत्रिका’ के माध्यम से पाठकों से साझा करूंगा।

रेलवे सम्पूर्ण देश की जीवन रेखा हैं। अधिकांश भारतीय युवाओं का सपना होता है रेलवे में नौकरी मिले तो रनिंग कर्मचारी जैसे लोको पायलट, गुड्स गार्ड, चल टिकट परीक्षक अथवा रेलवे सुरक्षा बल का स्क्वाड टीम आदि पद मिले। मुझे शुरु से ही गुड्स गार्ड बनने की इच्छा थी। वर्ष 2019 में गुड्स गार्ड के पद पर चयनित होने के बाद मुझे 2 महीने के विशेष प्रशिक्षण के लिए दक्षिण रेलवे के क्षेत्रीय प्रशिक्षण केंद्र तिरुचिरापल्ली भेजा गया। प्रशिक्षण समाप्ति के बाद सभी प्रशिक्षु के लिए परीक्षाएं चलाई गई जिसमें न्यूनतम 60% अंक लाना अनिवार्य होता है। 60% से अधिक अंक पाने के बाद ही मुझे गुड्स गार्ड के पद पर मंगलूरु जंक्शन नियुक्त किया गया। गार्ड अथवा गाड़ी मैनेजर या गाड़ी प्रबंधक चलती गाड़ी का प्रभारी होता है और गुड्स गार्ड मालगाड़ी का प्रभारी होता है। गुड्स गार्ड के रूप में कार्यभार संभालने के बाद मुझे पता चला कि कोई भी गाड़ी (मालगाड़ी अथवा सवारी गाड़ी) ‘ईश्वर के भरोसे’ नहीं चलता है जैसा कि अमूमन आम जनता या गैर रेलवे कर्मचारियों को लगता है कि टिकट खरीद कर रेल में बैठ जाने के बाद रेल ‘राम भरोसे’ चलती है। रेलवे के संचालन में सभी विभागों का बराबर योगदान होता है सभी विभागों के समन्वय से ही गाड़ी 1 इंच भी आगे बढ़ती है। किसी भी गुड्स गार्ड के निम्न कर्तव्य होते हैं :

- (i) स्टेशन मास्टर/ यार्ड मास्टर से वाहन मार्गदर्शन (वी जी - लिखित दस्तावेज जिसमें वैगनों की संख्या, उनका टेंयर वजन, अलग-अलग वैगनों का भार टन) आदि प्राप्त करना।
- (ii) किसी भी चीज के लिए पूरे फॉर्मेशन की जांच करना, जो गाड़ियों के सुरक्षित संचालन को खतरे में डाल सकता है।
- (iii) वैगनों के दरवाजे बंद है - जांच करना।
- (iv) लोको पायलट के साथ ब्रेक निरंतरता की जांच करना।
- (v) पर्याप्त ब्रेक पावर सुनिश्चित करने के बाद ब्रेक पावर सर्टिफिकेट (बीपीसी) पर हस्ताक्षर करना।
- (vi) किसी भी असामान्यताओं के लिए रनिंग गाड़ी पर फॉर्मेशन की लगातार निगरानी करना।
- (vii) संयुक्त गाड़ी रिपोर्ट, देर से आगमन रिपोर्ट जैसी गाड़ी रिपोर्ट तैयार करना।
- (viii) लोको पायलट /सहायक लोको पायलट के साथ ब्रेक बाइंडिंग आदि जैसी छोटी-मोटी परेशानियों का समाधान करना।
- (ix) गुजरने वाली सभी रेलवे स्टेशन पर ड्यूटी स्टेशन मास्टर अथवा पॉइंट्स मैन को ऑल -राइट सिगनल अथवा हरी झंडी या हरा प्रकाश दिखाकर सिगनल आदान -प्रदान करना।
- (x) विपरीत दिशा से आ रही सभी गाड़ियों के गार्ड को ऑल राइट सिगनल का आदान प्रदान करना।

गुड्स गार्ड का काम कुछ कठिन प्रवृत्ति का होता है। वह गाड़ी की पूरी रनिंग के दौरान अपने ब्रेक वैन में रहता है जहां कोई बुनियादी सुविधाएं नहीं होती। आजकल 8 पहिया ब्रेक वैन के चलने से स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ है। पहले गुड्स गार्ड के लिए शौचालय की कोई व्यवस्था नहीं थी। गाड़ियों के सिगनल अथवा स्टेशन पर रुकने के बाद ही उन्हें लघुशंका से निवारण मिलता था। सर्दी, गर्मी, धूप, बरसात सभी मौसमों में दिन हो अथवा रात, सबसे आखरी वैन में अकेले ही संचालन की जिम्मेदारी संभालनी होती है। वर्तमान में महिला गुड्स गार्ड के नियुक्ति के बाद स्थिति और परिस्थिति को गंभीरता से लेते हुए रेलवे ने अधिकतर ब्रेक वैन में शौच के लिए व्यवस्था की है, परंतु अब भी ब्रेक वैन में जल और प्रकाश का अभाव है। रात के अंधेरे में बिना पानी और प्रकाश के ड्यूटी लगातार रहती है। रात के समय में ब्रेक वैन में प्रकाश नहीं जलती है और कभी-कभी एक्सप्रेस गाड़ियों की क्रॉसिंग के लिए गाड़ी रास्ते के स्टेशनों पर लंबे समय तक प्रतीक्षा करती है। हम सूनेपन की बाहों में बाहें डालकर ड्यूटी करते हैं। अंधेरा हमारे साथ खेलती है

और जुगनू हमें निराशा की घड़ियों में तसल्ली देती रहती है। पाठकों से अनुरोध है, वह महसूस करें कि अंधेरी रातों में स्टेशन के अंतिम छोर पर या दो स्टेशनों के बीच आधी रात में जब दूर-दूर तक कोई ना दिखे ऐसी परिस्थिति में किसी कारणवश गाड़ी दो-तीन घंटे रुकना पड़े तो बिना बत्ती के कितनी देर हिम्मत जुटाए रहेंगे। सबसे पीछे रहने में कितनी पीड़ा होती है, जहां ना कोई चाय की दुकान हो ना कोई बात करने के लिए व्यक्ति। पेड़ों - पत्थरों से बात भी कर लेता हूं पर वह पलट कर आदमी की तरह जवाब नहीं देता है। खामोशी इतनी कि व्यक्ति अपनी आवाज की प्रतिध्वनि सुनकर डर जाए रनिंग गाड़ी में पटरियों पर पहियों की गड़गड़ाहट एक संगीत पैदा करती है। इसी संगीत में खोकर शायद सभी गाइर्स वर्षों तक बिना रुके चलते रहते हैं। बारिश के दिनों में फॉर्मेशन जांच के दौरान सांप, छछूंदर या बिच्छू से भी मुलाकात हो जाती है। इन सभी परेशानियों के बावजूद गाड़ी प्रबंधक की ड्यूटी स्वयं में एक उपलब्धि है। जीवन में आत्मनिर्भरता एवं कर्तव्य परायणता, समय अनुपालन आदि सभी सीख हमें ड्यूटी करते हुए मिलती है जो आजीवन हमें प्रोत्साहित करती है। काम की कठिनाइयों की भरपाई भत्तों से की जाती है, जिनमें से महत्वपूर्ण रनिंग भत्ता होता है। गाड़ी रनिंग के दौरान मासिक किलोमीटर के आधार पर हमें रनिंग भत्ता (अलाउंस) का भुगतान किया जाता है। सबसे अच्छी बात यह है कि हमारे ड्यूटी के प्रति समर्पण एवं सदाचार, समय अनुपालन को देखते हुए पदोन्नति का भी प्रावधान है। गुड्स गार्ड के बाद पैसेंजर गार्ड एवं एक्सप्रेस गार्ड है। पैसेंजर गार्ड के बाद एक अन्य संभावित पदोन्नति सेक्शन कंट्रोलर तथा मुख्य कंट्रोलर हैं। ऐसे पदों पर पदोन्नत करते समय उसका वेतन, रनिंग भत्ते के वेतन तत्व को ध्यान में रखकर किया जाता है जो कर्मचारी के लिए अत्यधिक लाभकारी होता है। हम सहायक प्रचालन प्रबंधक(ए ओ एम) के ग्रुप बी राजपत्रित पद के लिए एलडीसीई की परीक्षा भी लिख सकते हैं। प्रशिक्षण के दौरान ही हमें प्रशिक्षण मॉड्यूल में सामान्य नियम, रेलवे वाणिज्य नियम, रेलवे यांत्रिक नियम की नियमित कक्षाएं दी गई जो ड्यूटी के साथ-साथ आगे के कैरियर के लिए भी लाभदायक है। लोको पायलट, सहायक लोको पायलट, कंट्रोलर, स्टेशन मास्टर आदि के साथ रनिंग गाड़ी में समन्वय बनाना स्वयं में एक दिलचस्प कार्य है और थोड़ा कठिन भी। ड्यूटी में 'साइन इन' करने से 'साइन आउट' करने तक आठ से दस घंटे लगातार गाड़ी पर रहना होता है। गार्ड एवं गाड़ी दोनों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए ड्यूटी पूर्व, गार्ड के श्वसन और स्वास्थ्य जांच की जाती है।

गाड़ी गंतव्य पर पहुंचने के बाद 2 से 3 घंटे तक विश्राम और भोजन की सुविधा विभाग की ओर से मिलती है। पुनः अपने गृह स्टेशन लौटने तक 60 से 72 घंटे तक का समय लग जाता है और 'साइन इन' और 'साइन आउट' का समय अनिश्चित होता है क्योंकि कभी-कभी यह रात के 2.00 बजे हो सकते हैं और कभी-कभी सुबह के 5.00 भी हो सकते हैं। इस दौरान गार्ड को अपने घर, परिवार और शहर से बाहर रहना होता है। अंततः मैं यही कहना चाहूंगा कि भारतीय रेल में गाड़ी प्रबंधक का कार्य चुनौतियों से भरा है परंतु नियमों की सही जानकारी और अनुशासन में रहकर कर्तव्य निभाना मजेदार है। गार्ड के पद पर अब तक की ड्यूटी, मेरे लिए साहसिक कार्य और साहसिक यात्रा के रूप में रहा है। उम्मीद है कि यह जोश और उत्साह सदैव बना रहे। 2 वर्ष की लघु यात्रा के अपने अनुभव के सारांश को यहीं विराम देता हूं।



: धर्मेन्द्र दास :

गाड़ी प्रबंधक/ मंगलूर जंक्शन

चेम्बै वैद्यनाथ अय्यर

**“संगीत में एक व्यक्तिगत, जन्मजात सुंदरता होती है, जो अन्य ललित कलाओं से भिन्न होती है।
हवा में उत्पन्न होकर, यह 'निर्गुण ब्रह्म' - जो सभी जगहों को भरता है - 'नाद ब्रह्म' का रूप देते हुए,
हवा में घुल जाता है। इसलिए संगीत का अभ्यास 'निर्गुणब्रह्म' की पूजा है,
और संगीत अपने आप में एक योग है।” चेम्बै वैद्यनाथ अय्यर**

चेम्बै वैद्यनाथ अय्यर, जो चेम्बै के नाम से विख्यात है, कर्नाटक संगीत के स्वर्ण युग के एक प्रमुख संगीताचार्य थे। उनका जन्म 28 अगस्त, 1896 को पालक्काड जिले के कोट्टाई ग्राम पंचायत के एक गाँव चेम्बै में हुआ था। चक्रताण सुब्ब अय्यर, जो कर्नाटक संगीत के तिकड़ी के समकालीन, के परपोते और चेम्बै अनंत भागवतर के पुत्र युवा वैद्यनाथन के खून में ही संगीत बसा था। चेम्बै अपने भाई श्री सुब्रमणियम के साथ अपने पिता श्री अनंत भागवतर से संगीत सीखा। चेम्बै के पिता श्री अनंत भागवतर एक प्रतिभाशाली गायक और वायलिन वादक थे। चेम्बै भाइयों ने अपना पहला संगीत कार्यक्रम वर्ष 1905 में ओट्टपालम नामक शहर में एक मंदिर के उत्सव में किया था। भाइयों के शुरुआती करियर में मील के पत्थरों में से एक वाइकॉम और गुरुवायूर के मंदिर के त्योहारों में उनके संगीत कार्यक्रम थे।



मद्रास में चेम्बै का पहला संगीत कार्यक्रम वर्ष 1918 में त्रिप्लिकेन संगीत सभा में हुआ था। इस संगीत कार्यक्रम के बाद चेम्बै के संगीत कार्यक्रम करियर में और वृद्धि हुई और उन्होंने पूरे दक्षिण में कई प्रदर्शन दिए। चेम्बै के करियर की लंबाई 70 साल थी, जो वर्ष 1904 में शुरू हुई थी। शायद, दक्षिण के किसी भी प्रसिद्ध संगीतकारों में से सबसे लंबा।

प्रदर्शन क्षमता और गायन शैली

तीन साल की उम्र में, चेम्बै वैद्यनाथ अय्यर ने प्रथागत गुरु-शिष्य परंपरा में अपने पिता से कर्नाटक संगीत सीखना शुरू किया, और वर्ष 1912 में वायलिन और बांसुरी का प्रशिक्षण भी शुरू किया। चेम्बै के पास एक जोरदार, मजबूत, जीवंत, और गुंजायमान मधुर आवाज थी। वह एक स्पष्ट, खुले गले वाली शैली में गाते थे, जिसे खींचने के लिए उच्च स्तर के शारीरिक और मानसिक धीरज की आवश्यकता होती है, फिर भी, उन्होंने ऐसा सहज तरीके से किया। चेम्बै की कई विशेषताएं हैं, जैसे कि शास्त्रीय संगीत की गहन महारत, अद्वितीय मुखर शुद्धता, अटूट माधुर्य और मीठी उच्च आवृत्ति वाली आवाज। एक भगवतार के रूप में, क्षण भर में मनोधर्म प्रदर्शित करने की



उनकी क्षमता सराहनीय है। किसी भी निरावल या स्वरप्रस्थ को किसी भी स्वर और कीर्तन की किसी भी पंक्ति से शुरू करना और धुन में आश्चर्यजनक रूप से गाना आसान था। उन्हें सटीक काल प्रमाण (समय माप) की अद्भुत समझ थी। बिना थके गाते हुए उनकी टिप्पणियां, राग विस्तार के बीच में उनकी अचानक नाक की हरकतों ने हजारों रसिकों को उनके प्रशंसकों में बदल दिया। अपनी समृद्ध जीवंत आवाज और एक रिंगिंग टोन के साथ, चेम्बै के संगीत ने अपने श्रोताओं को आकर्षित किया।

गायन करियर

चेम्बै के करियर की लंबाई 70 साल थी, जो वर्ष 1904 में शुरू हुई थी। शायद, दक्षिण के किसी भी प्रसिद्ध संगीतकारों में से सबसे लंबा। चेम्बै के करियर को आकार देने में मदद करने वाली कुछ उल्लेखनीय घटनाएं थी - वर्ष 1904 में ओट्टपालम में उनका अरंगेट्रम (पहला संगीत कार्यक्रम), वर्ष 1907 में वैकम और गुरुवायूर में प्रदर्शन, कलियकुडी नटेश शास्त्री (1909) के साथ उनका वर्ष और पालक्काड अनंतराम भागवतर से मिली प्रशंसा (1911)। वर्ष 1913 और वर्ष 1927 के बीच, उन्होंने कई अलग-अलग संगीत समारोहों और सभाओं में प्रदर्शन किया, विशेष रूप से मद्रास संगीत अकादमी और अक्सर भुला दी गई जगन्नाथ भक्त सभा में।

चेम्बै के श्रेय में वर्ष 1932 से वर्ष 1946 तक रिकॉर्ड की गई कई फोनोग्राफ रिकॉर्डिंग हैं। वे कॉन्सर्ट माइक्रोफोन के आगमन से पहले के दिन थे, और एक सफल संगीत कार्यक्रम पेश करने के लिए किसी गायक पूरी तरह से अपनी आवाज की लय और पहुंच पर निर्भर था। चेम्बै को बड़ी गहराई की आवाज़ का आशीर्वाद प्राप्त था। इसके अलावा, यह धारणा कि चेम्बै के गानों की सूची सीमित थी, अत्यधिक गलत है। उनके द्वारा रिकॉर्ड की गई विभिन्न रचनाओं की संख्या सैकड़ों में है (अपने करियर के दौरान उनके संगीत कार्यक्रमों और रेडियो पर प्रदर्शन की कुल संख्या को गिने बिना)।

अन्य दिग्गजों ने चेम्बै के गायन की ताकत की प्रशंसा की है। उदाहरण के लिए, यह देखते हुए कि चेम्बै एक ही दिन में तीन प्रमुख संगीत कार्यक्रम गाने में सक्षम थे, संगीत कलानिधि जी.एन.बालासुब्रमण्यम ने टिप्पणी की, “ये सामान्य पुरुष नहीं हैं। ये संगीत क्षेत्र के असुर हैं। अगर मैं एक संगीत कार्यक्रम गाता हूं, मुझे अगले पूरे दिन आराम करने की आवश्यकता है”। प्रख्यात तबला वादक पुदुक्कोट्टई दक्षिणमूर्ति पिल्लै ताल और लय पर उनकी बेदाग पकड़ के लिए उन्हें “लय ब्रह्मा” कहते थे। संगीत कलानिधि के.वी. नारायणस्वामी ने भी समय के विस्तारित अंतराल के लिए श्रुति से पूरी तरह से संरेखित नोटों को धारण करने की चेम्बै की क्षमता पर टिप्पणी की है।

वर्ष 1952 में चेम्बै ने अपनी आवाज खो दी थी और अपने पसंदीदा देवता गुरुवायूरप्पन का नाम नहीं ले सकते थे। उन्होंने अपने देवता से उग्रतापूर्वक प्रार्थना की और जाहिर तौर पर उनकी प्रार्थना का उत्तर दिया गया जब एक अजनबी ने 18 दिनों के लिए केरल के पूमुल्लिमना में नीलकंठन नंबूदिरिपाड के निवास पर उनकी आवाज का इलाज किया। उनका आवाज वापस आया और वे बड़े हुए जोश के साथ गाने में सक्षम हो गए। तब से, उन्होंने अपनी कमाई का अधिकांश हिस्सा गुरुवायूर मंदिर को दान देने लगे।

शिष्य

चेम्बै के कई छात्र थे। वह जाति और धर्म से परे सोच कर और विभिन्न जाति और धर्म के लोगों को अपने शिष्यों के रूप में स्वीकार करके अपने जीवन काल से परे सोचने में सक्षम थे। उन्हें उभरते संगीतकारों के प्रोत्साहन और नई प्रतिभाओं को पहचानने की क्षमता के लिए जाना जाता था। इनके छात्रों में पद्मविभूषण डॉ.के.जे.येशुदास, संगीत कलानिधि टी.वी.गोपालकृष्णन, श्रीमती पी.लीला, जया-विजया जुडवाँ, कुडमालूर वेंकटरमण, चेम्बै नारायण भगवतर, परमशिवन भागवतर, गुरुवायूर पोन्नम्माल, टी. एन. कृष्णन, पलनी सुब्रमण्यम पिल्लै, एल. सुब्रमण्यम और अन्य जैसे कई प्रसिद्ध संगीतकार शामिल हैं। अपने साथियों और शिष्यों के लिए उनकी सहानुभूति उल्लेखनीय थी और वे उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए किसी भी हद तक जा सकते थे।

उपाधियों और सम्मानों

चेम्बै ने अपने करियर के दौरान कई पुरस्कार और खिताब प्राप्त किए, जिनमें सबसे उल्लेखनीय हैं :-

- 1935 - संगीत सम्राट (तिरुच्चि में कल्कि कृष्णमूर्ति की अध्यक्षता में दी गई उपाधि)
- 1940 - गायन गंधर्व
- 1951 - संगीत कलानिधि (कर्नाटक संगीत में सर्वोच्च सम्मान)
- 1958 - संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार
- 1964 - संगीत कलासिखामनी (दि फाइन आर्ट्स सोसाइटी, चेन्नई द्वारा)
- 1973 - राष्ट्रपति का पद्म भूषण पुरस्कार

केरल कलामंडलम (कला का एक प्रसिद्ध संस्थान) द्वारा चेम्बै को केरल के सर्वश्रेष्ठ ज्ञात भारतीय संगीतकार के रूप में उनकी प्रसिद्धि के सम्मान में सुवर्ण मुद्रा (स्वर्ण पदक) प्रदान किया गया। चेम्बै को दिए गए कुछ अन्य सम्मान हैं संगीत प्राचीन पद्धति परिपालक, संगीत भीष्मचार, अभिनव त्यागब्रह्म, गुरुवायूरप्प दासर आदि। कोच्चि, मैसूर, बड़ौदा, विजयनगरम, बोम्बिली और जयपुर के राजाओं ने भी उन्हें कई सम्मानों से नवाजा है।

वर्ष 1996 चेम्बै के जन्म शताब्दी के अवसर पर डाक विभाग, भारत सरकार ने एक विशेष अंक डाक टिकट जारी किया।

मृत्यु

16 अक्तूबर 1974 को 78 वर्ष की आयु में हृदय आघात से चेम्बै की अचानक मृत्यु हो गई। उससे कुछ समय पहले, उन्होंने ओट्टपालम (अपने पहले संगीत कार्यक्रम का स्थान) में पूळिकुन्नु श्रीकृष्ण मंदिर में अपना अंतिम संगीत कार्यक्रम किया, और संगीत कार्यक्रम का समापन अपने पसंदीदा गीत "करुणा चयवान एंथु थामसम कृष्णा" (आपकी दया बरसने में इतनी देरी क्यों है, कृष्णा?) के साथ किया। वह अपने शिष्य ओलप्पमना वासुदेवन नंबूदिरिपाड से बात कर रहे थे जब अचानक वे गिर पड़े और उनकी मृत्यु हो गई। उनके जन्म गांव में उनका अंतिम संस्कार किया गया।

केरल सरकार ने उनकी याद में पालक्काड में सरकारी संगीत कॉलेज का नाम बदलकर 'चेम्बै मेमोरियल गवर्नमेंट म्यूजिकल कॉलेज' कर दिया है।

चेम्बै संगीतोत्सव

चेम्बै 1924 से अपने पैतृक गांव में एक संगीत समारोह आयोजित करते आ रहे थे। यह उनके परिवार द्वारा जारी रखा गया है। यह समारोह, जिसे चेम्बै एकादशी संगीत समारोह कहा जाता है, प्रतिवर्ष फरवरी-मार्च में आयोजित किया जाता है। चेम्बै, हर साल गुरुवायूर एकादशी दिवस (मध्य नवंबर) पर गुरुवायूर में भी एक संगीत समारोह आयोजित किया करते थे। यह उत्सव, जिसे अब उनके सम्मान में चेम्बै संगीतोत्सव कहा जाता है, आधिकारिक तौर पर गुरुवायूर देवस्वोम बोर्ड द्वारा आयोजित किया जाता है।



गुरुवायूरप्पन चेम्बै पुरस्कार

श्री कृष्ण मंदिर, गुरुवायूर द्वारा सम्मानित, श्री गुवायूरप्पन चेम्बै पुरस्कार, दिवंगत चेम्बै वैद्यनाथ भागवतार की स्मृति में स्थापित किया गया है। यह पुरस्कार, जिसमें रुपए 50,001 का नकद पुरस्कार, श्री गुरुवायूरप्पन का एक स्वर्ण लॉकेट, एक प्रशस्ति पत्र और पोन्नाडै (शॉल) शामिल है, आमतौर पर वार्षिक चेम्बै संगीत समारोह के दौरान प्रस्तुत किया जाता है।



उपसंहार

70 वर्षों की संगीत तपस्या के माध्यम से, चेम्बै कर्नाटक संगीत को लोकप्रिय बनाने, संगीत प्रेमियों को आनंदित करने, ज्ञान और स्नेह के साथ अपने शिष्यों को विकसित करने और एक ही समय में एक विनम्र व्यक्तिगत जीवन जीने में सक्षम थे। एक संगीत परिवार में जन्मे और एक आध्यात्मिक जीवन जीते हुए, चेम्बै ने अपने सभी उत्थान के लिए गुरुवायूरप्पन को श्रेय दिया।

: सी रमा सुरेश :

व.अनुवादक/पालक्काड



जहाँ शब्द असफल हो जाते हैं, वहाँ संगीत बोलता है।

किसी के बारे में राय बनाने से पहले सोचें

तत्काल सर्जरी के लिए बुलाए जाने के बाद एक डॉक्टर ने जल्दबाजी में अस्पताल में प्रवेश किया। जल्दी से उन्होंने कॉल का जवाब दिया, अपने कपड़े बदले और सीधे सर्जरी ब्लॉक में चले गए। उन्होंने लड़के के पिता को हॉल में डॉक्टर का इंतजार करते हुए पाया।

डॉक्टर को देखते ही लड़के के पिता ने चिल्लाया, "तुमने आने में इतना समय क्यों लिया? क्या आप नहीं जानते कि मेरे बेटे की जीवन खतरे में है? क्या आपको जिम्मेदारी की कोई भावना नहीं है?"

डॉक्टर मुस्कुराया और कहा, "मुझे खेद है, मैं अस्पताल में नहीं था और मैं कॉल प्राप्त करने के बाद जितनी जल्दी हो सके उतनी तेजी से आया और अब, मैं चाहता हूँ कि आप शांत हो जाएं ताकि मैं अपना काम कर सकूँ।"

"शांत हो जाओ! क्या होता अगर आपका बेटा अभी इस कमरे में होता, तो क्या आप शांत हो जाते? अगर आपका अपना बेटा डॉक्टर के इंतजार में मर जाता है तो आप क्या करेंगे? डॉक्टर ने फिर से मुस्कुराते हुए जवाब दिया, "हम भगवान की कृपा से अपनी पूरी कोशिश करेंगे और अब आपको अपने बेटे के स्वस्थ जीवन के लिए भी प्रार्थना करनी चाहिए"।

"दूसरों को सलाह देना बहुत आसान है। जब अपनों पर बीतती है तब पता चलता है" पिता ने बड़बड़ाया। सर्जरी में कुछ घंटे लगे, उसके बाद डॉक्टर खुश हो कर बाहर निकले, "धन्यवाद! आपका बेटा बच गया है! और पिता के जवाब की प्रतीक्षा किए बिना वह यह कहते हुए दौड़ते हुए चले गए, "यदि आपके पास कोई प्रश्न है, तो नर्स से पूछें"।

लड़के के पिता को नाराजगी हुई कि डॉक्टर जल्दबाजी में चले गए। उन्होंने नर्स से कहा, "डॉक्टर इतना अहंकारी क्यों है? वह कुछ मिनट इंतजार नहीं कर सकता था ताकि मैं अपने बेटे की स्थिति के बारे में पूछूँ" डॉक्टर के जाने के कुछ मिनट बाद नर्स को देखते हुए पिता ने टिप्पणी की। नर्स ने जवाब दिया, उसके चेहरे आंसू से भीगे हुए थे, "उसके बेटे की कल एक सड़क दुर्घटना में मृत्यु हो गई, वह दफन कार्य में था जब हमने उसे आपके बेटे की सर्जरी के लिए बुलाया और अब जब उसने आपके बेटे की जान बचाई, तो वह अपने बेटे को दफन कार्य को खत्म करने के लिए दौड़ते हुए निकल गए।

कभी भी किसी के बारे में तुरंत राय न बनाएं, क्योंकि आप कभी नहीं जानते कि उनका जीवन कैसा है और वे किस दौर से गुजर रहे हैं।

: बिनीता सोय :

राजभाषा अधिकारी/पालक्काड

**सम्मान कीजिए हर चिकित्सक का
क्योंकि वह किरदार निभाता है एक रक्षक का।**



सोशल मीडिया का जीवन पर प्रभाव

हर एक शताब्दी किसी न किसी चीज के लिए पहचानी जाती है। ऐसे ही 21 वीं शताब्दी इंटरनेट और वेब मीडिया के युग की शताब्दी मानी जाती है। लोगों और विभिन्न स्थानों को जोड़ने वाले सोशल मीडिया एक माध्यम है जिसे हमने अपने जीवन के एक अटूट हिस्से के रूप में अपनाया है। सोशल मीडिया का जन्म विभिन्न व्यक्तियों, समाज व विचारों की अभिव्यक्ति के लिए हुआ। सोशल मीडिया के कारण आज पूरी दुनिया सिमट कर एक छोटा सा गांव बन गया है। सोशल मीडिया इंटरनेट के अंदर वर्चुवल मंच कहा जा सकता है। इसके माध्यम से लोग संवाद करते हैं और आपस की जानकारी का आदान-प्रदान करते हैं।



सोशल मीडिया की सेवाएं: इंटरनेट और सोशल मीडिया के माध्यम से सोशल नेटवर्किंग बिजनेस नेटवर्क, फोटो-वीडियो शेयरिंग, सोसायटी उपयोग, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग और मैसेजिंग की सेवाएं ले सकते हैं।

सोशल मीडिया की भूमिका और सकारात्मक प्रभाव : दुनिया के भिन्न-भिन्न देशों में लोग सोशल मीडिया का भिन्न-भिन्न प्रकार से इस्तेमाल करते हैं। सोशल मीडिया दुनिया को एक सूत्र में बांध कर रखती है। इंटरनेट, साइबरस्पेस और सोशल मीडिया ने मानव सभ्यताओं के परिवर्तन में बड़ी क्रांतिकारी भूमिका निभाई है। आज स्थिति ऐसी हो गई है कि सोशल मीडिया के बगैर कोई अपनी दिनचर्या की कल्पना नहीं कर सकता। इसके प्रयोग से सात समुंदर पार बैठे किसी भी व्यक्ति से लोग बातचीत और वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कर सकते हैं। इससे अपने रिश्ते मजबूत रख पाने में आसानी होती है। फोटो, वीडियो और सूचना से जुड़े खबरों के मंच के लिए सोशल मीडिया सबसे बेहतरीन उपाय है। शिक्षा के क्षेत्र में सोशल मीडिया क्रांति ला रही है। दुनिया भर की किताबों का डिजिटल पुस्तकालय और ऑनलाइन क्लास के कारण यह तेजी से बढ़ रही है। आर्थिक स्तर पर देखें तो कोई भी व्यक्ति या संस्था विश्व भर के बाजारों का हाल आसानी से जान सकते हैं और घर बैठे-बैठे इस पर चर्चा कर सकते हैं। सोशल मीडिया ने सामाजिक व्यवस्था में भी परिवर्तन किया है। देश-विदेश की समाज और संस्कृति को हम समझ रहे हैं और उन्हें अपना रहे हैं। सोशल मीडिया ने स्वास्थ्य संबंधी जानकारी जैसे कोविड-19 के समय पर एवं पर्यावरण संबंधी जागरूकता फैलाई है। जो खबरें पहले मीडिया के द्वारा दब जाती थी सोशल मीडिया के माध्यम से अब लोगों के सामने आने लगी है। सोशल मीडिया ने लोगों में राजनीतिक जागरूकता भी फैलाई है। लोग अभी देश विदेश की राजनीति को समझ रहे हैं। लोगों को अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए उचित फार्मूला मिला है। सोशल मीडिया ने कई प्रतिभाओं को बढ़ने का मौका दिया। ऐसे ही सोशल मीडिया सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्तर पर कई परिवर्तन किए जिन्हें वरदान से कम नहीं माना जा सकता। सोशल मीडिया और इंटरनेट सामाजिक व राजनीतिक स्तर पर कई परिवर्तन किए।

सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभाव : इसके नकारात्मक प्रभाव भी कम नहीं हैं। सोशल मीडिया पर घंटों बैठे रहने की वजह से कई बार लोग मानसिक तनाव का शिकार हो जाते हैं। सबसे बड़ी बात यह कि सोशल मीडिया का लत हमारे स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर रहा है। शारीरिक रूप से ही नहीं बल्कि लोगों के दिमाग पर भी इसका नकारात्मक असर पड़ रहा है। जिसके बारे में सलाहकार पिछले काफी समय से चेतावनी देते आ रहे हैं। हाल ही में एक शोध में इस बात का खुलासा हुआ है कि सोशल मीडिया का बहुत ज्यादा इस्तेमाल करने वाले लोग मानसिक रूप से बीमार हो रहे हैं। अध्ययन के मुताबिक सोशल मीडिया का ज्यादा इस्तेमाल नींद में कमी या डिस्टर्बेंस का कारण बन सकता है। लगातार ऐसा रहने से डिप्रेशन, याददाश्त में कमी, मानसिक क्षमता का घटना जैसी समस्या के होने की भी पूरी-पूरी संभावना रहती है। इसके अलावा पेट की प्रॉब्लम्स, सिरदर्द, आंख दर्द, जी मिचलाना, मांसपेशियों में तनाव जैसी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। सोशल मीडिया के जरिए अपराधों की संख्या में भी वृद्धि हो

गई है। सोशल मीडिया पर लोगों की रंग-बिरंगी लाइफ को देखकर कई लोगों में हीनभावना पनपने लगती है कि दूसरे लोगों की लाइफ कितनी अच्छी है, वो कितने खुश रहते हैं और एक मेरी जिंदगी से टेंशन खत्म होने का नाम ही नहीं ले रही। यह भावना धीरे-धीरे उन्हें डिप्रेशन का शिकार बना देती है। डिप्रेशन का शिकार व्यक्ति लोगों से अलग-थलग रहने लगता है, उसे कुछ भी अच्छा नहीं लगता, ड्रग्स की लत भी लग जाती है और कई बार तो आत्महत्या तक के विचार भी आ जाते हैं। सोशल मीडिया की वजह से लोग अपनी बॉडी को लेकर भी इनसिक्योर रहने लगे हैं। लेकिन हम ये भूल जाते हैं कि सोशल मीडिया वर्चुवल दुनिया है, यहां सिर्फ वही दिखता है जो हम लोगों को दिखाना चाहते हैं। रील और रियल लाइफ बहुत अलग-अलग होती है। सभी जानते हैं कि साइबरस्टॉकिंग एक गंभीर अपराध है, जो अवैध गतिविधि के अंतर्गत भी आता है। ऐसे साइबर क्रिमिनल्स हर समय आपके जरूरी पर्सनल डिटेल्स पर नजर गड़ाए बैठे रहते हैं, जिनसे वह आप को ब्लैकमेल करके लाभ उठा सकें। यह वास्तविकता है कि सोशल मीडिया के अधिकतम उपयोग के कारण समाज में अपराधिक गतिविधियां बढ़ रही हैं। कम उम्र के नौजवान ही ऐसी गतिविधियों के चपेट में ज्यादा आते हैं। कई बार समाज में अशांति फैलाने के लिए झूठी अफवाहें फैला दी जाती हैं, जिसके कारण माहौल बहुत बिगड़ जाता है। ऐसी अफवाहें कई बार आक्रामकता और दंगे का स्वरूप भी ले लेते हैं। सोशल मीडिया आज के शिक्षा पद्धति पर बहुत नकारात्मक प्रभाव डाल रहा है। शिक्षा संस्थानों में अब इस प्रकार से पढ़ाई लिखाई नहीं हो रही है, जैसे पहले के समय में होती थी।

विद्यार्थियों के हाथ में पुस्तकों से ज्यादा मोबाइल फोन देखने को मिलता है, जिससे यह साबित होता है कि सोशल मीडिया किस तरह से विद्यार्थियों की शिक्षा को प्रभावित कर रही है। साइबर हैकिंग के विषय में तो आप सभी ने सुना ही होगा। सोशल मीडिया साइबर हैकर्स के लिए लक्ष्य साधने का एक आसान रास्ता है। हैकर्स दूसरों के पर्सनल डिटेल्स की चोरी करते हैं। यदि सुरक्षा नहीं बरती गई तो आपको इस बात का आभास भी नहीं होगा, कि कब आप साइबर अपराधियों के नजर में आ जाएंगे। देश में अशांति फैलाने वाले कट्टरवादी समुदाय हर समय अपने प्रोपेगेंडा के जरिए द्वेष पूर्ण गतिविधियों को बढ़ावा देते रहते हैं। सोशल मीडिया के उपयोग से ही ऐसे असामाजिक तत्व देश में दंगे करवाते हैं। ऑनलाइन ट्रोलिंग एक बहुत बड़ी समस्या बन चुकी है। कई बार लोगों को इतना ट्रोल कर दिया जाता है, कि वे आत्महत्या करने पर भी मजबूर हो जाते हैं। वर्तमान में सोशल मीडिया किसी भी खबर को गलत खबरों के साथ जोड़कर, गलत तरीके के फोटो और वीडियो एडिट कर इसके साथ भड़काऊ संदेश प्रसारित करते हैं। आजकल सोशल मीडिया का प्रयोग राजनेता भी अपने पक्ष में अलग तरीके से माहौल तैयार करने में करते हैं। राजनेताओं का अपने सोशल मीडिया विंग होती है। इसे पब्लिसिटी पोस्ट, फेक न्यूज आदि के द्वारा किसी पक्ष में माहौल तैयार करते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से आतंकवादियों एवं उग्रवादियों के भर्ती भी होती है। उनके सोशल मीडिया विंग लोगों के बीच नफरत फैलाने का काम करती है। भारत में डिजिटल साक्षरता की भी कमी है जिसके वजह से साधारण लोगों को साइबर अपराध से कई प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता है। डाटा की चोरी करना, मोबाइल बैलेंस के पैसे उड़ा लेना, एटीएम से पैसे उड़ा लेना आदि इसी श्रेणी में आता है।

आगे की राह : सोशल मीडिया लोगों के बीच की दूरियों को कम करने के लिए जाना जाता है। वहीं अगर इसका इस्तेमाल हद से ज्यादा किया जाए तो फिर इसके विपरीत परिणाम भी देखने को मिल सकती है। सोशल मीडिया की अधिक इस्तेमाल लोगों को अपने परिवार से अलग कर सकता है क्योंकि परिवार के सदस्यों के बीच फेस टू फेस कनेक्शन कम होता है। सोशल मीडिया जितना लाभदायक है उतना नुकसानदायक भी। यह बात पूरी तरह से इसकी उपयोगिता पर निर्भर करता है कि इसका इस्तेमाल कैसे कर रहे हैं। सोशल मीडिया वर्तमान समय में एक दो धारी तलवार है यदि हमने सोशल मीडिया को सुरक्षित और भरोसेमंद बनाने में सफलता प्राप्त कर ली तो अवश्य फायदेमंद एवं लाभदायक होगा अन्यथा इसे अभिशाप बनते भी देर न लगेगी।



: लक्ष्मी विश्वनाथन :

वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/पालक्काड

अमर - प्रेम



मैं बैठा था अकेला सागर किनारे और उन ऊँची-ऊँची उठती हुई लहरों को देख रहा था, जो किनारे से टकराकर धीमा पड़ कर लौट जाती थी। उसे देखते-देखते अनायास ही मेरे आँखों के सामने उस दिन की सारी घटनाएं चलचित्र की भांति चलने लगी।

मैं गहरी नींद में सोया था कि अचानक मेरे कानों में कोई आवाज आई, मुझे लगा किसी ने मुझे जगा दिया और मैं बाहर आया तो किसी के सिसकने की आवाज आ रही थी। मैं ध्यान से उस आवाज को सुनने लगा तो मुझे लगा कि वह किसी औरत की सिसकने की आवाज थी। वह दर्द से कराह रही थी, फिर ऐसा लगा कि वह चलने लगी। उसके सिसकने में इतना दर्द था कि मैं खुद को रोक नहीं पाया मैं भी उसके पीछे-पीछे चल दिया। वो उसकी पायल की आवाज छम-छम, छम-छम, छम-छम..... पता नहीं उसमें कितना दर्द समेटे हुए थी। वह आवाज आगे-आगे जा रही थी और मैं उसी आवाज के पीछे-पीछे। उस पायल की आवाज से मेरे शरीर में एक कंपन से उठ रही थी और मेरा मन किसी अनहोनी घटना को सोच कर सिहर उठा।

मैं चला जा रहा था उस रात के अंधेरे में किसी धान के क्यारियों के पगडंडियों पर और न जाने कितनी देर चलता रहा। मेरे कदम नदी की उस धारा में भी नहीं रुके, खैर नदी में पानी कम था और मैं उसे पार कर गया। रात का तीसरा पहर बीतने वाला था। सुनसान रास्ते में सिर्फ पायल की दर्द भरी आवाज अंधेरे को चीरते हुए मेरे कानों तक आ रही थी। मेरे कदम उन पहाड़ी के पथरीले रास्ते पर चल रहे थे जिन पर एक-एक कदम बढ़ाना भी मुश्किल हो रहा था। उस पहाड़ी को पार करने के बाद मैं खुद को समुद्र के किनारे पाया। जिसकी अथाह गहराई खुद के अंदर न जाने कितने ही दर्द छिपाए थी और बाहर लहरों की तरंगें मानो उस दर्द को छिपाने की कोशिश में अपनी सारी शक्ति समेटकर किनारों को भिगोना चाहती हो। धीरे-धीरे अंधेरा छाने लगा और सुबह सूर्य की सुनहरी किरणों से नहा रही थी और उन किरणों से सागर की लहरें तेज प्रकाशपुंज के रूप में प्रदीप्त हो रही थी।

मुझे लगा कि अचानक वह आवाज ना जाने कहां खो गई, मैं बेतहाशा सागर के किनारे दौड़ा जा रहा था, मन में बहुत सारे शंकाएं उठने लगी थी। दौड़ते-दौड़ते अचानक मेरे कदम रुक गए और मेरी नजर उस सुबह के सूर्य की किरणों से चमकती हुई और सागर की लहरों से बार-बार टकराकर बेसुध पड़ी एक औरत पर जाकर ठहर गई। जो नई नवेली दुल्हन के लिबास में पड़ी थी। मैं उसके पास जाकर उसे खूब झकझोड़ा कि शायद वह उठ जाए लेकिन वह बेसुध चिर-निद्रा में सोई थी जहां से वह कभी नहीं उठ सकती थी। मैं उसे गौर से निहारता रहा, वह वही थी जिसे कभी मैंने अपने दिल में ही नहीं बल्कि अपनी आत्मा से प्यार किया था, जिसे मैं खुद से ज्यादा ही चाहा था, जिसकी हर खुशी में मेरा मन खुश होता था और उसके गम में मेरे आँखों से आंसू की अविरल धारा निकल जाती थी। उसकी शादी किसी अमीर घराने के शहजादे से होने वाली थी। वह मुझे इस हाल में यहां पर मिलेगी मैं सपने में भी नहीं सोचा था, मुझे यकीन नहीं हो रहा था। इसके लिए मैं खुद को उसका कसूरवार समझूं या फिर उस भगवान को जिसने उसे बनाया तो लेकिन उसके किस्मत में उसका प्यार नहीं लिखा। यह सोचकर मेरी रूह कांप उठी और मेरे कदम लड़खड़ाने लगे और मुझे लगा कि मेरी सांसे भी शायद मेरा साथ नहीं देना चाह रही थी। कुछ ही देर में मेरी आँखों के आगे अंधेरा छाने लगा और

मैंने अपने आप को संभालने की बहुत कोशिश की लेकिन खुद को संभाल नहीं पाया और मैं भी उसी तरह गिर पड़ा अचेतन और मेरी आत्मा मेरे शरीर को छोड़ चुकी थी और मैं भी उसी गहरी निद्रा में सो गया जहां से किसी का भी उठना संभव नहीं होता। मुझे लगा कि वह बाहें फैलाए मुझे बुला रही है और दोनों आत्माएं ऐसे मिले जिसे इस दुनिया वाले कभी भी अलग नहीं कर सके और दोनों का प्रेम अमर हो गया।

शायद प्यार करने वालों की और उसके प्यार के इस दुनिया में कोई कद्र नहीं। सच्चे प्यार करने वाले तो मिल ही जाते हैं चाहे वो इस ज़िंदगानी में मिले या फिर इस ज़िंदगी के बाद मिले। शायद यह सपना था या फिर आने वाला कल का एहसास। इसलिए,

सच्चे प्यार करने वालों का यही सिलसिला रहा,
गर ना मिल सके इस ज़िंदगी में तो अगले ज़िंदगी का इंतजार रहा।

: बिभास पासवान :
सहायक मंडल इंजीनियर/पालक्काड

हस्ते हसाते

पप्पू- तुम ओपरेशन कराये बिना ही अस्पताल से क्यों भाग आये ??

चिंटू- नर्स बार-बार कह रही थी कि डरो मत, हिम्मत रखो, कुछ नहीं होगा, ये तो बस एक छोटा सा ओपरेशन है।

पप्पू- तो इस में डरने वाली कौन सी बात है, सही ती कह रही थी नर्स

चिंटू- साले, वो मुझ से नहीं डाक्टर से कह रही थी।



मास्टर पप्पू से:- एक तरफ पैसा, दुसरी तरफ अक्ल, तो तुम क्या चुनोगे ?

पप्पू: पैसा

मास्टर:- गलत, मैं होता तो मैं अक्ल चुनता

पप्पू:- आप सही कह रहे हो सर,
जिसके पास जिस चीज की कमी होती है वो वही तो चुनेगा।



मास्टर बोला - पप्पू कोई प्यार वाली शायरी सुनाओ.

पप्पू - "मोटा मरता मोटी पे,
भूखा मरता रोटी पे,
मास्टरजी की है दो बेटी और
मैं मरता हूँ छोटी पे!!!"

मास्टर जी अभी तक बेहोश है।



प्रोफेसर ने हिंदी क्लास में पुछा - "गाली की परिभाषा बताओ .."

स्टूडेंट बोला - अत्यधिक क्रोध आने पर शारीरिक रूप से हिंसा न करते हुए, मौखिक रूप से की गयी हिंसात्मक कार्यवाही के लिए चुने गए शब्दों का समूह, जिसके उच्चारण के पश्चात मन को असीम शांति का अनुभव होता है, उसे हम गाली कहते हैं !!

प्रोफेसर - आपके चरण कहाँ हैं प्रभु



सास: जमाई राजा
अगले जन्म में आप क्या बनोगे?
जमाई: सासू मां मैं अगले जन्म में छिपकली बनूंगा.
सास: छिपकली क्यों?
जमाई: क्योंकि मेरी बीवी छिपकली से बहुत डरती है.



यदि यौवन जानता, यदि बुढ़ापा सक्षम होता



हर पीढ़ी के बुजुर्ग को लगता है कि “आजकल के बच्चे कुछ नहीं जानते” और शायद उनके जमाने में भी उनके बुजुर्गों को यही लगता होगा कि “ये आजकल के बच्चे भी न कुछ नहीं जानते” यह सामान्य बात है कि हर पीढ़ी अपने आने वाले पीढ़ियों से कई अपेक्षाएं रखती है। परंतु सामर्थ्य और अनुभव का मेल हर पीढ़ी के सभी युवाओं एवं बूढ़ों को एक साथ नहीं मिल पाता है। जहां युवावस्था में शारीरिक और मानसिक सामर्थ्य होता है परंतु अनुभव एवं ज्ञान की कमी होती है फिर बुढ़ापा में अनुभव एवं बुद्धि अत्याधिक होती है परंतु तन और मन साथ नहीं देता है इसलिए कहा गया है “यदि यौवन जानता, यदि बुढ़ापा सक्षम होता”।

युवा व्यक्ति ज्ञान और तकनीकी में बुजुर्गों की तुलना में काफी अधिक जानकार होता है। उदाहरण के लिए मान लीजिए आप की नवीनतम स्मार्टफोन खराब हो गई है और आप एक दुकान पर गए हैं वहां रिपेयरिंग के लिए 26 साल का एक युवक और 52 साल का एक बुजुर्ग खड़ा है। आप मोबाइल रिपेयर या सॉफ्टवेयर अपडेट के लिए किसे अपना मोबाइल देंगे। बेशक आप उस 26 साल के युवक को ही मोबाइल रिपेयरिंग करने को कहेंगे। अब एक दूसरे उदाहरण से समझते हैं मान लीजिए अब आप खुद खराब हो गए, मेरा मतलब है आप बीमार हो गए हैं। आप हृदय रोग से ग्रसित हैं। अस्पताल में हृदय चिकित्सक एक 26 वर्षीय युवा डॉक्टर है और दूसरा 52 वर्षीय अनुभवी डॉक्टर है जिन्हें 26 साल का शल्य चिकित्सा का अनुभव है। अब आप किनसे अपना हृदय संबंधी ऑपरेशन करवाएंगे। बेशक आप उस 52 वर्षीय अनुभवी डॉक्टर के पास ही जाना पसंद करेंगे। तात्पर्य यह है कि अनुभव कई बार किताबी और तकनीकी ज्ञान पर भारी पड़ता है। जहां किताबी ज्ञान काम नहीं आता वहां अनुभव काम आता है। युवाओं में तरल बुद्धि होती है। उनमें रचनात्मकता काफी होती है। उनमें जिज्ञासाओं का भंडार होता है।

मार्क जुकरबर्ग, कार्ल मार्क्स, भगत सिंह, एलन मस्क, शंकराचार्य आदि वे उदाहरण हैं जो युवावस्था में ही दुनिया को सोचने समझने का नजरिया ही बदल दिए।

मार्क जुकरबर्ग दुनिया के सबसे धनी उद्यमियों में से एक हैं। मात्र 12 साल की उम्र में ही कई कंप्यूटर गेम विकसित कर दिए। कॉलेज के दौरान ही फेसबुक ऐप बनाने पर काम करना शुरू कर दिए। वर्ष 2008 में फेसबुक दुनिया से जुड़ गया। वर्ष 2012 में फेसबुक की तरह फोटो और वीडियो शेयरिंग ऐप इंस्टाग्राम का अधिग्रहण किया।

वैज्ञानिक समाजवाद के जन्मदाता, संस्थापक, मजदूरों, किसानों और पीड़ितों के मसीहा कहे जाने वाले मार्क्स को दुनिया हमेशा याद रखेगी। कार्ल मार्क्स ने वर्ग संघर्ष, पूंजीवाद, ऐतिहासिक भौतिकवाद, सामाजिक परिवर्तन आदि पर अपने महत्वपूर्ण सिद्धांत दिए जो वर्तमान समय में भी प्रासंगिक हैं।

जब शक्ति का दुरुपयोग हो तो हिंसा बन जाती है लेकिन जब शक्ति का प्रयोग सही काम में किया जाए तो वह न्याय का रूप ले लेती है। भारत के महान स्वतंत्रता संग्राम सेनानी शहीद भगत सिंह भारत देश के महान विभूति हैं। सिर्फ 23 साल की उम्र में उन्होंने अपने देश के लिए अपने प्राण दे दिए थे। भारत की आज़ादी के समय भगत सिंह सभी नौजवानों के लिए आए थे जो उन्हें देश के लिए आगे आने को प्रोत्साहित करते थे।

आदि शंकराचार्य भारत के एक महान दार्शनिक एवं धर्म प्रवर्तक थे। उन्होंने अद्वैत वेदांत को ठोस आधार प्रदान किया। भगवत गीता, उपनिषदों और वेदांत सूत्र पर लिखी हुई उनकी टीकाएं बहुत प्रसिद्ध हैं। उन्होंने सांख्य दर्शन का प्रधानकारणवाद और मीमांसा दर्शन के ज्ञान कर्मसमूचेवाद का खंडन किया।

हमें ऐसे कई उदाहरण मिल जाते हैं जब युवाओं ने दुनिया को बदलने का सामर्थ्य रखा है और बुढ़ापा आने से पहले ही दुनिया को अलविदा कह दिए जैसे स्वामी विवेकानंद और इस प्रकार के कई ऐसे उदाहरण हैं जिन्हें हम जानते हैं।

युवाओं के आदर्शवाद को अनुभव के ज्ञान से संयमित किया जा सकता है, और युवाओं के उत्साह से परंपरा की दिनचर्या को सक्रिय किया जा सकता है। बहुत सारी ज्ञान अनुभव से ही आती है। ज्ञान के उचित प्रयोग के लिए अनुभव का होना अति आवश्यक है क्योंकि बिना अनुभव का ज्ञान कभी-कभी निरर्थक साबित होता है। बहुत सारे ऐसे युवा हैं जो बिजनेस सीखने के लिए, एमबीए करने के लिए विदेश जाते हैं और विदेश से लौटने के बाद बड़ा बिजनेस खड़ा करते हैं और उसे तुरंत चौपट कर देते हैं। हर बार एकेडमिक ज्ञान काफी नहीं होता है। अनुभव पर आधारित ज्ञान ही हमें जीवन में सफल बनाता है। अमूमन देखा जाता है कि युवाओं में धैर्य की कमी होती है। युवाओं में भावनात्मक अस्थिरता होती है। उनमें उत्तेजना अधिक होती है।

कौन कहता है कि बुजुर्ग सक्षम नहीं होते। ऐसे कई बुजुर्ग अर्थात् अनुभवी व्यक्ति रह चुके हैं जिन्होंने अपने अनुभव के आधार पर देश और दुनिया को एक नई दिशा दी। उदाहरण के लिए एपीजे अब्दुल कलाम, रतन टाटा, चाणक्य, अमर्त्य सेन, मुंशी प्रेमचंद, डॉक्टर भीमराव अंबेडकर, सुकरात, प्लेटो, अरस्तु, आइंस्टीन आदि को हम सभी अच्छी तरह से जानते हैं। हम सभी परिचित हैं कि ये सभी अनुभवी व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने अनुभव के आधार पर दुनिया को एक नया आयाम दिया और आज दुनिया का एक अलग ही तस्वीर और तकदीर है।

83 साल की उम्र में आखिरी सांस लेने वाले कलाम ने अपने जीवन के कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की। कलाम के ही नेतृत्व में भारत ने अपना पहला स्वदेशी उपग्रह प्रक्षेपण यानी एसएलवी 3 बनाया। 1980 में रोहिणी उपग्रह को पृथ्वी की कक्षा के समीप स्थापित किया और भारत अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष क्लब का सदस्य बन गया। कलाम ने विज्ञान 20-20 दिया इसके तहत कलाम ने भारत को विज्ञान के क्षेत्र में तरक्की के जरिए 2020 तक अत्याधुनिक करने की सोच दी। कलाम भारत सरकार के मुख्य वैज्ञानिक सलाहकार भी रहे। एपीजे अब्दुल कलाम ने 1998 में पोखरण में दूसरी बार ऊर्जा परीक्षण किया। इस तरह भारत ने परमाणु हथियार के निर्माण की क्षमता प्राप्त करने में सफलता हासिल की। वे तीसरे ऐसे राष्ट्रपति हैं जिन्हें भारत रत्न प्राप्त हुआ है, इससे पहले राष्ट्रपति सर्वपल्ली राधाकृष्णन एवं जाकिर हुसैन को भारत रत्न मिला। प्रथम वैज्ञानिक जो राष्ट्रपति बने और प्रथम राष्ट्रपति भी थे जो अविवाहित थे। वर्ष 1989 में भारत सरकार ने देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान पद्म भूषण फिर वर्ष 1990 में पद्म विभूषण और उन्हें भारत रत्न प्रदान किया। ऐसे कई उदाहरण मिल जाएंगे जिन्होंने अपने जीवन के आखिरी समय में भी देश और दुनिया को विकास देने में और मानवता को बनाए रखने में अथक प्रयास किया।

अब हम समझते हैं कि यदि यौवन सक्षम होता तो इसका परिणाम क्या होता। यदि यौवन सक्षम होता तो युवाओं में बेहतर स्वास्थ्य होती। युवा बेहतर निर्णय करने और निर्णय लेने में भी सक्षम होते। युवा अधिक पैसे बचाने की क्षमता रखते। समाज में अपराध नियंत्रण होता एवं अपराध कम होते। युवा कम सांप्रदायिक होते। इससे हमारा समाज, राज्य और देश का सतत विकास होता। युवा अपने परिवार में अच्छे भावी माता-पिता होते। अगर युवा सक्षम होता अर्थात् अनुभवी होता तो समाज का एक अलग ही रूप होता।

लेकिन अगर युवा समय से पहले ही अधिक सक्षम एवं सामर्थ्यवान हो जाए अर्थात् समय पूर्व ही अनुभवी हो जाए, समय से पूर्व ही परिपक्वता हासिल कर ले तो इसके कुछ नकारात्मक प्रभाव भी हो सकते हैं। जैसे उनमें जिज्ञासाओं की कमी हो जाएगी। कोई भी युवा वर्ग या यौवन जो समय से पूर्व क्षमता हासिल कर ले, अनुभव हासिल कर ले तो उनमें जिज्ञासा की कमी हो जाएगी। उनमें उत्साह कम हो जाएगा। उनमें समय पूर्व ही परिपक्वता आ जाएगी। उनके अंदर रचनात्मक ऊर्जा कम हो जाएगी। नई नई खोज करने की इच्छा शक्ति भी कम हो जाएगी। जोखिम लेने की क्षमता भी बहुत कम हो जाएगी और साहसिक कार्य करने की क्षमता भी लगभग खत्म हो जाएगी।

बूढ़े बुजुर्ग भी सक्षम होते हैं। इस पंक्ति की सार्थकता के लिए मुझे एक शायर की पंक्ति याद आ रही है “कौन कहते हैं बुढ़े इश्क नहीं करते, इश्क तो करते हैं पर कोई उन पर शक नहीं करते।” बुढ़े लोग जो सक्षम हैं, उनमें जीवन प्रत्याशा काफी अधिक होती है। उनका स्वास्थ्य स्थिति काफी बेहतर होता है। उनकी वित्तीय सामर्थ्य अच्छे होते हैं। बूढ़े जिनमें

जीवन प्रत्याशा अच्छी होती है, जिनका स्वास्थ्य स्थिति अच्छा होता है, जिनकी वित्तीय सामर्थ्य अच्छी होती है, जिन्हें उम्र संबंधी समस्याएं नहीं होती है वह कई बार दुनिया को एक नया दिशा देते हैं, उदाहरण के लिए वारेन बुफेट, रघुराम राजन, पुतिन, मुकेश अंबानी, ओबामा, अमिताभ बच्चन ऐसे कई उदाहरण हैं जिन्होंने उम्र की सीमा को पार करके भी अपने काम से दुनिया को अपना और अपने देश का परिचय करवाया।

अब हम समझते हैं बूढ़े या बुजुर्ग व्यक्ति जो सक्षम नहीं हैं, जिन पर उम्र का प्रभाव काफी बढ़ जाता है उन्हें किन किन समस्याओं से गुजरना होता है और क्यों उन्हें लगता है कि “काश बुढ़ापा सक्षम होता ?”। वृद्ध अवस्था में याददाश्त की कमी, स्मृति का अभाव, बुद्धिमत्ता की कमी, प्रतिक्रिया समय का अभाव, ऊर्जा स्तर में कमी होना, रोगों से ग्रसित होना और वित्तीय निर्भरता, वे कारण हैं जो बूढ़े बुजुर्गों को असक्षम बनाते हैं जिसके कारण वह कुछ भी कर पाने में स्वयं को असमर्थ महसूस करते हैं। अगर बूढ़े लोग सामर्थ्य होते तो क्या अच्छा होता ? अगर बूढ़े बुजुर्ग सामर्थ्य होते हैं, उनके पास तन, मन और धन का सामर्थ्य उसी प्रकार होता जैसे यौवन या युवावस्था में होता तो स्वास्थ्य अवसंरचना बहुत अच्छा होता। नेतृत्व और मार्गदर्शन, कार्य योग्यता बहुत अच्छा होता। उदाहरण के लिए अगर रतन टाटा को और 50 साल का अच्छा स्वास्थ्य मिल जाए अगर उनका स्वास्थ्य इतना अच्छा रहे कि वह देश को और 50 साल दे पाए तो आप कल्पना कर सकते हैं कि हमारे देश का विकास कहां तक पहुंचेगा अथवा एपीजे अब्दुल कलाम को अगर हम और 50 साल बचा कर रख पाते, अगर वह जीवित होते। और 50 साल अगर वह हमारे देश के लिए परमाणु कार्यक्रम में बने रहते तो हमारा देश 2047 तक कहां होता। इसकी आप कल्पना कर सकते हैं। महात्मा गांधी अगर और 20 साल जीवित रहते तो हमारा देश का संविधान शायद कुछ अलग ही होता। स्वामी विवेकानंद की मृत्यु अल्पायु में हो गई थी अगर वह कुछ साल होते तो समाज सुधार या धार्मिक सुधार काफी अच्छा होता। सरदार पटेल ना मरते तो चीजें अलग होती। देश का गठन एक अलग ही रूप से होता। तो हम समझ सकते हैं कि अगर बूढ़े लोग जो क्षमतावान हैं जिनमें सामर्थ्य है अगर उनको और अधिक समय तक जीवित रख पाते तो दुनिया का नक्शा ही एक अलग होता।

परंतु इसके कुछ नकारात्मक पक्ष भी हैं। अगर बूढ़े अधिक सामर्थ्यवान हो जाए, अगर बूढ़े बुजुर्ग अधिक क्षमतावान हो जाए तो इनकी कुछ समस्याएं भी हैं। अधिक सामर्थ्यवान होने के बाद अगर बुजुर्ग लंबे समय तक जीवित रहने लगे या क्रियाशील हो जाए तो पीढ़ी संघर्ष काफी बढ़ जाएगा। रोजगार की समस्या बढ़ जाएगी। अब मान लीजिए कि कोई बुजुर्ग है 70 - 80 साल का हो गया और उनका स्वास्थ्य बहुत अच्छा है। अब वह सेवानिवृत्ति ही नहीं चाहता है। चाहे सरकारी क्षेत्र में हो या गैर सरकारी क्षेत्र में हो और निरंतर अपने आप को बनाए रखना चाहता है तो इससे रोजगार की समस्या भी हो जाएगी। युवाओं को मौका ही नहीं मिलेगा। शक्ति का केंद्रीकरण हो जाएगा। समाज, परिवार, राज्य में या देश में शक्ति और सत्ता बुजुर्गों के हाथ में आ जाएगा। बुजुर्गों का शासन स्थापित हो जाएगा। जनसंख्या भी काफी बढ़ जाएगी क्योंकि बूढ़े देर से मरेंगे। बुजुर्ग स्वास्थ्य अच्छा होने के कारण लंबे समय तक जीवित रहेंगे। उनकी जीवन प्रत्याशा बढ़ जाएगी, जिससे संसाधनों की कमी होगी। संसाधनों का अभाव होने लगेगा। युवाओं के लिए कुछ बचेगा ही नहीं। युवा कुंठित हो जाएंगे।

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि युवा एवं बुढ़ापा एक समय है और एक समय का अंतराल है जिसमें 1 पीढ़ी का अंतर आता है और इसी अंतर को समझने के लिए हमें यह समझना आवश्यक है कि युवावस्था में हमें ज्ञान और धन अर्जित करने हैं ताकि जब बुढ़ापा हो तो हमें उस ज्ञान और अनुभव के आधार पर स्वयं को सक्षम बनाना है तभी हम कह सकते हैं कि बुढ़ापा सक्षम होगा और युवा जानकार होगा।

तो जो एक व्यावहारिक समाधान बन जाता है वह यह है कि युवा और वृद्ध एक साथ काम करते हैं। आज जब हम जनरेशन गैप और इससे जुड़ी समस्याओं की बात करते हैं तो हमें यह समझना होगा कि बूढ़े लोग कभी जवान थे और आज के युवा कल बूढ़े हो जाएंगे। इसलिए दोनों को एक-दूसरे को समझने की कोशिश करनी चाहिए और एक-दूसरे की ताकत-बूढ़े के अनुभव और युवा के उत्साह को उचित सम्मान देना चाहिए। जब दोनों एक साथ काम करेंगे तभी हम युवा वृद्धों के अंग बनेंगे और वृद्ध युवाओं के मस्तिष्क बनेंगे। तो सही मायने में हम दोष नहीं देंगे – “यदि यौवन जानता, यदि बुढ़ापा सक्षम होता।”

: कुंदन कुमार राउत :

कनिष्ठ अनुवादक /पालक्काड

बदलता भारत : नयी आशाएं, नयी चुनौतियां



भारतीय स्वतंत्रता के अवसर पर पंडित जवाहरलाल नेहरू ने एक भाषण दिया था - ट्रिस्ट विथ डेस्टिनी - जिसमें उन्होंने कहा था - " भविष्य हमें इशारा कर रहा है कि हम कहाँ जाएँ और हमारा प्रयास क्या होगा? भारत के आम आदमी, किसान और मजदूर के लिए स्वतंत्रता और अवसर लाना ; गरीबी, अज्ञानता और बीमारी को खत्म करना; एक समृद्ध, लोकतांत्रिक और प्रगतिशील राष्ट्र का निर्माण करना, और सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक संस्थाओं को सुदृढ़ करना जो उनके लिए न्याय और जीवन की परिपूर्णता सुनिश्चित करेगी ।"

इस भाषण में उन्होंने देश से गरीबी, बेरोज़गारी आदि मिटाने तथा सभी को स्वास्थ्य, शिक्षा, आवास और पेयजल जैसी जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति का संकल्प लिया ।

इस साल अगस्त में हम भारत की पचहत्तरवीं स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहे हैं और इस अवसर पर विचार करने वाली बात यह है कि क्या भारत के लोगों की परिस्थितियां बदल गयी है ? क्या लोगों की सारी मूलभूत आवश्यकताएं पूरी हो चुकी है ?

जवाब है - बिल्कुल नहीं । लेकिन बहुत कुछ ऐसा है जो बदल गया है और वह है इन समस्याओं से निपटने की भारत की क्षमता । आज बहुत सारी सकारात्मक परिस्थितियां भारत के साथ है जिससे हम इस संकल्प को पूरा कर सकते हैं ।

इसलिए भारत के सर्वोच्च विचार, मंच, नीति आयोग तथा भारत सरकार ने मिलकर एक नया लक्ष्य- पचहत्तर पर नया भारत - की संकल्पना की है जो नीति निर्माण और कार्यान्वयन के मूल में नवाचार, प्रौद्योगिकी, उद्यम और कुशल प्रबंधन को एक साथ लाने का प्रयास है ।

इसमें एक ऐसे विशिष्ट भारत की संकल्पना की गई है जिसमें अभी तक व्याप्त कोई समस्याएं नहीं होगी; जिसमें लोगों के लिए गैस, बिजली, इंटरनेट कनेक्शन और शौचालय युक्त घर होगा । लोग सही रूप में शिक्षित होंगे । अत्याधुनिक और विशाल आधारभूत संरचना का नेटवर्क होगा । सभी के पास पर्यावरणीय रूप से स्वच्छ गाड़ियां होंगी । हवा, पानी, गांव, शहर स्वच्छ होंगे और वह एक प्रभावशाली देश होगा जो गरीबी, बेरोज़गारी, तथा भ्रष्टाचार से मुक्त होगा ।

लेकिन चिंता करने वाली बात यह है कि क्या उपरोक्त दी गई न्यू इंडिया की संकल्पना इतनी आसानी से मूर्त रूप ग्रहण कर लेगी ? क्योंकि जो रास्ता जितना आसान दिखता है वास्तव में होता नहीं है । अतः हमें उन चुनौतियों पर भी गंभीरता पूर्वक विचार कर लेना चाहिए जो न्यू इंडिया के लक्ष्य को प्राप्त करने में बाधक हो सकती हैं या समस्या उत्पन्न कर सकती हैं ।

आज भारत सबसे तेजी से बढ़ती अर्थ-व्यवस्थाओं में से एक है । लेकिन क्या यह विकास समावेशी है ? आज भारत के 10% लोगों के पास 90% संपत्ति है जबकि 90% जनता के पास मात्र 10% और यह असंतुलन लगातार बढ़ता ही जा रहा है । यदि मान भी लिया जाए कि अगले 15 वर्षों में भारत की अर्थ-व्यवस्था 7.5 ट्रिलियन डॉलर की हो जाएगी तो

मुख्य चुनौती यह है कि इसमें कितना प्रतिशत भाग निम्न वर्ग के हिस्से में आएगा। सिर्फ आंकड़ों से कुछ नहीं होगा और इसलिए कहा गया है कि-

**"तुम्हारी फाइलों में गाँव का मौसम गुलाबी है,
मगर ये आँकड़े झूठे हैं ये दावा किताबी है।"**

दूसरी प्रमुख चुनौती जो न्यू इंडिया के सामने है, वह है जनांकिकीय लाभांश को कुशल व योग्य बनाकर उसका रचनात्मक तरीके से इष्टतम प्रयोग करना। भारत लगभग 135 करोड़ आबादी वाला देश है, जिसकी 62 प्रतिशत आबादी 59 वर्ष से कम आयु की है अर्थात् कार्यबल में शामिल है। लेकिन इसका लगभग 50% कृषि क्षेत्र में प्रच्छन्न बेरोज़गारी के रूप में अनुत्पादक कार्यों में लगकर अपनी बहुमूल्य क्षमता को नष्ट कर रहा है। आज भारत में विभिन्न डिग्री या उपाधिधारक लोग चतुर्थ क्लास की नौकरियों के लिये दर-दर भटक रहे हैं क्योंकि उन्हें उनकी योग्यता के अनुसार कोई कार्य नहीं मिल पा रहा है। अतः सभी लोगों को रोज़गार देना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है और यह नहीं कर सके तो यह लाभांश न्यू इंडिया के लिए किसी आपदा से कम नहीं होगा।

इसी प्रकार, हमारी आधी आबादी अर्थात् महिलाओं को भारत के विकास व न्यू इंडिया के निर्माण में सहयोगी बनाना भी एक चुनौतीपूर्ण कार्य रहेगा। स्वामी विवेकानंद जी ने ठीक कहा है, "जैसे किसी पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना आसान नहीं है उसी प्रकार बिना महिलाओं की स्थिति में सुधार किए इस समाज का कल्याण संभव नहीं है।"

आज भारत को अपनी ऊर्जा आवश्यकता का 80% लगभग आयात से पूरा करना पड़ता है जिससे अन्य सामाजिक सुरक्षा योजनाओं एवं विकास परियोजनाओं की तरफ ध्यान नहीं दे पाते। अतः नवीकरणीय व गैर-परंपरागत ऊर्जा संसाधनों के माध्यम से इस चुनौती का सामना करने हेतु गंभीर प्रयास करने होंगे। गिरता लिंगानुपात, उच्च शिशु व मृत्यु दर, निम्न गुणवत्ता व निम्न स्तर की स्वास्थ्य सुविधाएँ ऐसे अनेक चुनौतियाँ भी भारत के सामने हैं।

लेकिन आज भारत के साथ बहुत सारी सकारात्मक परिस्थितियाँ हैं जो एक नव भारत की संकल्पना को पूरी करवा सकती हैं। भारत आज विश्व की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक है। आज विभिन्न योजनाओं के माध्यम से भारत सरकार देश के लोगों को बिजली कनेक्शन, गैस कनेक्शन प्रदान करना तथा भारत निर्माण के माध्यम से आधारभूत संरचना का विकास करवा रहे हैं। डिजिटल इंडिया से लोगों को इंटरनेट कनेक्शन प्रदान किया। स्वच्छ भारत अभियान के माध्यम से गाँव और शहर को स्वच्छ बना रहे हैं। विभिन्न योजनाओं जैसे जन धन योजना, स्किल इंडिया मिशन, खाद्य सुरक्षा मिशन, ई गवर्नेंस - इन सभी के द्वारा एक नव भारत का निर्माण जारी है।

इसमें कोई शक नहीं है कि नव भारत का संकल्पना वास्तव में धरती पर स्वर्ग बनाने की संकल्पना है और इसे मूर्त रूप देना चुनौती पूर्ण बात है। लेकिन -

"कौन कहता है आसमान में सुराख नहीं हो सकता,

एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारों।"

दुनिया में कोई भी काम असंभव नहीं है। बस लगन, मेहनत और ईमानदारी से प्रयास किया जाए तो किसी भी लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं।

श्री आनंद परम की इन पंक्तियों से अपना भाषण समाप्त करना चाहूंगी -

"कोशिश कर, हल निकलेगा

आज नहीं तो कल निकलेगा।

अर्जुन के तीर सा सध मरुस्थल से भी जल निकलेगा।

ज़िंदा रख दिल में उम्मीदों को, गरल के समंदर से भी गंगाजल निकलेगा।

कोशिश जारी रख कुछ कर गुजरने की,

जो है आज थमा थमा सा, चल निकलेगा।

: अविना अलियार :

स्टेशन मास्टर/ कल्लाई

कवि सम्मेलन - 14.10.2022



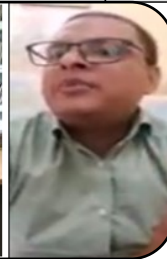
कवि सम्मेलन - 14.10.2022



राजभाषा उत्सव - 2022-2023



दिनांक	प्रतियोगिता
22.08.2022 – 23.08.2022	हिन्दी शीर्षक प्रतियोगिता
24.08.2022	हिन्दी निबंध प्रतियोगिता
25.08.2022	टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता
30.08.2022	बूझो तो जाने प्रतियोगिता
01.09.2022	आओ पुस्तकों को जाने प्रतियोगिता
06.09.2022	हिंदी फिल्मी गीत प्रतियोगिता
13.09.2022	वाक् प्रतियोगिता





संसदीय राजभाषा समिति की दूसरी उप समिति द्वारा पालक्काड मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय का निरीक्षण।

तिरुवनंतपुरम में – दि.24.09.2022





सुविचार

जीवन एक महान कैनवास है,
आपको उसे विभिन्न रंगों से सजाना चाहिए !

दुनिया को अक्सर वह लोग बदल देते हैं
जिन्हें दुनिया कुछ करने लायक नहीं समझती !!

जिन्दगी का हर एक छोटा हिस्सा ही
हमारी जिंदगी की सफलता का बड़ा हिस्सा होता है !

मेहनत का फल और समस्या का हल,
देर से ही सही लेकिन मिलता जरूर है !!

हमारे सारे सपने सच हो सकते हैं,
अगर हमारे पास आगे बढ़ने की हिम्मत हो !

हमारी समस्या का हल सिर्फ हमारे पास ही है,
दूसरों के पास तो हमारी समस्या का सुझाव है !!

गलत लोग सभी के जीवन में आते हैं
लेकिन सीख हमेशा सही देकर जाते हैं !

जो उड़ने से ही डरते हो
वो कभी उड़ान नहीं भर सकते !!

वी वी वंसता, टंकण अधीक्षक
द्वारा संकलित



बेकल किला



बेकल किला, केरल के मलाबार तट के सबसे उत्तरी भाग में पड़ने वाले, एक शांत और अनोखे शहर, कासरगोड में स्थित है। पिछले कुछ दशकों में, इस किले और इसके आसपास के खूबसूरत, सफ़ेद रेतिले समुद्री तट ने, कई प्रसिद्ध फ़िल्मों की पृष्ठभूमि के रूप में वैभव प्राप्त किया है। हालाँकि, इस किले का महत्व और इतिहास कई सदियों पुराना है। यह किला अपने अंदर सदियों की विरासत और संस्कृति को समेटे हुए है, जिसने इस क्षेत्र के इतिहास को आकार देने में एक मुख्य भूमिका निभाई है।

इस किले के पास ही स्थित है, बेकल फोर्ट रेलवे स्टेशन जो दक्षिण रेलवे के पालक्काड मंडल का एक महत्वपूर्ण रेलवे स्टेशन है। बेकल फोर्ट रेलवे स्टेशन प्रतिदिन लगभग 10 गाड़ियों को संभालता है और लगभग 5000 लोगों की सेवा करता है। इस रेलवे स्टेशन का पुराना नाम पल्लीकरै रेलवे स्टेशन था। लेकिन बाद में इसका नाम बेकल किले के नाम पर 'बेकल फोर्ट रेलवे स्टेशन' रख दिया गया। बेकल फोर्ट रेलवे स्टेशन के आसपास भारतीय रेलवे के पास लगभग 13 एकड़ जमीन है।